## अध्याय ११

# भगवान् नित्यानन्द के विस्तार

जिस प्रकार दसवें अध्याय में श्री चैतन्य महाप्रभु की शाखाओं तथा उपशाखाओं का वर्णन किया गया है, उसी तरह इस ग्यारहवें अध्याय में श्री नित्यानन्द प्रभु की शाखाओं तथा उपशाखाओं की सूची दी जा रही है।

নিত্যানন্দ-পদাম্ভোজ-ভৃঙ্গান্প্রেম-মধূন্মদান্ ।
নত্বাখিলান্তেষু মুখ্যা লিখ্যন্তে কতিচিন্ময়া ॥১॥

**नित्यानन्द-पदाम्भोज-भृङ्गान्प्रेम-मधून्मदान् ।**
**नत्वाखिलान्तेषु मुख्या लिख्यन्ते कतिचिन्मया ॥ १ ॥**

**नित्यानन्द**—श्री नित्यानन्द प्रभु के; **पद-अम्भोज**—चरणकमल; **भृङ्गान्**—भ्रमर; **प्रेम**—भगवत्प्रेम के; **मधु**—शहद से; **उन्मदान्**—उन्मत्त; **नत्वा**—प्रणाम करने के बाद; **अखिलान्**—उन सबको; **तेषु**—उनमें से; **मुख्याः**—प्रमुख; **लिख्यन्ते**—वर्णन किया जा रहा है; **कतिचित्**—उनमें से कुछ; **मया**—मुझसे।

**अनुवाद**

**मैं श्री नित्यानन्द प्रभु के उन समस्त भक्तों को नमस्कार करता हूँ, जो उनके चरणकमलों के मधु को संचय करने वाले भौरों के समान हैं। नमस्कार करने के बाद उनमें से जो जो अत्यधिक प्रमुख हैं, उनका वर्णन करने का प्रयास करूँगा।**

জয় জয় মহাপ্রভু শ্রী-কৃষ্ণ-চৈতন্য ।
তাঁহার চরণাশ্রিত যেই, সেই ধন্য ॥২॥

**जय जय महाप्रभु श्री-कृष्ण-चैतन्य ।**
**ताँहार चरणाश्रित ग्रेइ, सेइ धन्य ॥ २ ॥**

**जय जय**—जय जय; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **श्री-कृष्ण-चैतन्य**—श्रीकृष्ण चैतन्य के नाम से प्रख्यात; **ताँहार चरण-आश्रित**—वे सभी जिन्होंने उनके चरणकमलों में शरण ली है; **ग्रेइ**—कोई भी; **सेइ**—वह है; **धन्य**—धन्य।

**अनुवाद**

**श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो! जिस किसी ने उनके चरणों की शरण ले ली है, वह धन्य है।**

জয় জয় শ্রী-অদ্বৈত, জয় নিত্যানন্দ ।
জয় জয় মহাপ্রভুর সর্ব-ভক্ত-বৃন্দ ॥৩॥

**जय जय श्री-अद्वैत, जय नित्यानन्द ।**
**जय जय महाप्रभुर सर्व-भक्त-वृन्द ॥ ३ ॥**

**जय जय**—जय हो; **श्री-अद्वैत**—श्री अद्वैत आचार्य की; **जय**—जय हो; **नित्यानन्द**—श्री नित्यानन्द प्रभु की; **जय जय**—जय हो; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **सर्व**—सभी; **भक्त-वृन्द**—भक्तों की।

**अनुवाद**

**श्री अद्वैत प्रभु, नित्यानन्द प्रभु तथा श्री चैतन्य महाप्रभु के समस्त भक्तों की जय हो!**

তস্য শ্রী-কৃষ্ণ-চৈতন্য-সৎপ্রেমামর-শাখিনঃ ।
ঊর্ধ্ব-স্কন্ধাবধূতেন্দোঃ শাখা-রূপান্গণান্নুমঃ ॥৪॥

**तस्य श्री-कृष्ण-चैतन्य-सत्प्रेमामर-शाखिनः ।**
**ऊर्ध्व-स्कन्धावधूतेन्दोः शाखा-रूपान्गणान्नुमः ॥ ४ ॥**

**तस्य**—उनका; **श्री-कृष्ण-चैतन्य**—श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु; **सत्-प्रेम**—भगवान् के शाश्वत प्रेम का; **अमर**—अविनाशी; **शाखिनः**—वृक्ष का; **ऊर्ध्व**—अति ऊँची; **स्कन्ध**—शाखा; **अवधूत-इन्दोः**—श्री नित्यानन्द के; **शाखा-रूपान्**—विविध शाखाओं के रूप में; **गणान्**—भक्तों को; **नुमः**—मैं आदर देता हूँ।

**अनुवाद**

**श्री नित्यानन्द प्रभु श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु के भगवत्प्रेम रूपी अमर**

**वृक्ष की सबसे ऊपरी शाखा हैं। मैं उस सबसे ऊपरी शाखा की समस्त उपशाखाओं को सादर नमस्कार करता हूँ।**

শ্রী-নিত্যানন্দ-বৃক্ষের স্কন্ধ গুরুতর ।
তাহাতে জন্মিল শাখা-প্রশাখা বিস্তর ॥৫॥

**श्री-नित्यानन्द-वृक्षेर स्कन्ध गुरुतर ।**
**ताहाते जन्मिल शाखा-प्रशाखा विस्तर ॥ ५ ॥**

**श्री-नित्यानन्द-वृक्षेर**—श्री नित्यानन्द रूपी वृक्ष की; **स्कन्ध**—मुख्य शाखा; **गुरुतर**—अत्यन्त भारी; **ताहाते**—उस शाखा से; **जन्मिल**—उगी; **शाखा**—शाखाएँ; **प्रशाखा**—उपशाखाएँ; **विस्तर**—विस्तार।

**अनुवाद**

**श्री नित्यानन्द प्रभु श्री चैतन्य-वृक्ष की सर्वाधिक भारी शाखा हैं। उस शाखा से अनेक शाखाएँ तथा उपशाखाएँ निकलती हैं।**

মালাকারের ইচ্ছা জলে বাড়ে শাখা-গণ ।
প্রেম-ফুল-ফলে ভরি' ছাইল ভুবন ॥৬॥

**मालाकारेर इच्छा जले बाड़े शाखा-गण ।**
**प्रेम-फुल-फले भरि' छाइल भुवन ॥ ६ ॥**

**माला-कारेर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **इच्छा-जले**—उनकी इच्छा रूपी जल से; **बाड़े**—बढ़ती हैं; **शाखा-गण**—शाखाएँ; **प्रेम**—भगवत्प्रेम; **फुल-फले**—फूल एवं फलों सहित; **भरि'**—भरकर; **छाइल**—ढक लिया; **भुवन**—सारे संसार को।

**अनुवाद**

**श्री चैतन्य महाप्रभु के इच्छा-जल से सिंचित होकर ये सारी शाखाएँ तथा उपशाखाएँ असीम रूप से बढ़ गई हैं, और अपने फलों और फूलों से उन्होंने समस्त विश्व को आच्छादित कर लिया है।**

অসঙ্খ্য অনন্ত গণ কে করু গণন ।
আপনা শোধিতে কহি মুখ্য মুখ্য জন ॥৭॥

**असङ्ख्य अनन्त गण के करु गणन ।**
**आपना शोधिते कहि मुख्य मुख्य जन ॥७॥**

**असङ्ख्य**—अनगिनत; **अनन्त**—अनन्त; **गण**—भक्त; **के**—कौन; **करु**—सकता है; **गणन**—गिनना; **आपना**—स्वयं; **शोधिते**—शुद्धि के लिए; **कहि**—मैं कहता हूँ; **मुख्य मुख्य**—केवल प्रमुख; **जन**—व्यक्ति।

### अनुवाद

**भक्तों की ये शाखाएँ तथा उपशाखाएँ अगणनीय तथा असीम हैं। इनकी गिनती कौन कर सकता है? मैं अपनी निजी शुद्धि के लिए उनमें से जो सर्वाधिक प्रमुख हैं, उन्हीं की गिनती करने का प्रयास करूँगा।**

### तात्पर्य

मनुष्य को भौतिक नाम, यश या लाभ के लिए दिव्य विषय पर पुस्तकें या लेख नहीं लिखने चाहिए। दिव्य साहित्य का लेखन किसी वरिष्ठ अधिकारी (गुरुजन) के निर्देश के अन्तर्गत करना चाहिए, क्योंकि यह भौतिक प्रयोजनों के लिए नहीं होता। यदि वह किसी गुरुजन के निर्देश में लिखने का प्रयास करता है, तो वह शुद्ध बन जाता है। समस्त कृष्णभावनामय कार्यों को निजी शुद्धि (*आपना शोधिते*) के लिए करना चाहिए, न कि भौतिक लाभ के लिए।

শ্রী-বীরভদ্র গোসাঞি—স্কন্ধ-মহাশাখা ।
তাঁর উপশাখা যত, অসঙ্খ্য তার লেখা ॥৮॥

**श्री-वीरभद्र गोसाञि—स्कन्ध-महाशाखा ।**
**ताँर उपशाखा य़त, असङ्ख्य तार लेखा ॥८॥**

**श्री-वीरभद्र गोसाञि**—श्री वीरभद्र गोसांइ; **स्कन्ध**—तने की; **महा-शाखा**—सबसे बड़ी शाखा; **ताँर**—उसकी; **उपशाखा**—उपशाखाएँ; **य़त**—सब; **असङ्ख्य**—अनगिनत; **तार**—उसका; **लेखा**—वर्णन।

### अनुवाद

**नित्यानन्द प्रभु के बाद सबसे बड़ी शाखा वीरभद्र गोसांइ हैं, जिनकी भी अनेक शाखाएँ तथा उपशाखाएँ हैं। उन सबका वर्णन कर पाना सम्भव नहीं है।**

**तात्पर्य**

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर ने अपने *अनुभाष्य* में लिखा है, वीरभद्र गोसांइ श्रील नित्यानन्द प्रभु के पुत्र और जाह्नवी देवी के शिष्य थे। उनकी असली माता वसुधा थीं। *गौरगणोद्देश-दीपिका* (६७) में उन्हें क्षीरोदकशायी विष्णु के अवतार बतलाया गया है। इस तरह वीरभद्र गोसांइ श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु से अभिन्न हैं। हुगली जिले में झामटपुर गाँव में वीरभद्र गोसांइ के शिष्य यदुनाथाचार्य की दो पुत्रियाँ थीं—एक असली पुत्री जिसका नाम श्रीमती था और दूसरी पोष्य पुत्री जिसका नाम नारायणी था। इन दोनों की शादियाँ हुई थीं, जिसका उल्लेख भक्ति रत्नाकर (के तेरहवें तरंग) में हुआ है। वीरभद्र गोसांइ के तीन शिष्य थे, जो उनके पुत्रों के तौर पर विख्यात हैं—गोपीनाथ वल्लभ, रामकृष्ण तथा रामचन्द्र। सबसे छोटा शिष्य रामचन्द्र शाण्डिल्य गोत्र का था और उसका कुलनाम वटव्याल था। उसने अपने परिवार को खड़दह में बसाया और इसके सदस्य खड़दह के गोस्वामी कहलाते हैं। सबसे बड़ा शिष्य गोपीजन वल्लभ बर्दवान जिले के मानकर रेलवे स्टेशन के निकट लता नामक गाँव का निवासी था। द्वितीय शिष्य रामकृष्ण मालदह के निकट गयेशपुर गाँव में रहता था।" श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर की टिप्पणी है कि चूँकि ये तीनों शिष्य भिन्न-भिन्न गोत्रों के थे और उनके कुलनाम तथा निवासस्थान भी भिन्न थे; अतएव उन्हें वीरभद्र गोसांइ के असली पुत्र नहीं माना जा सकता। रामचन्द्र के चार पुत्र थे, जिनमें राधामाधव सबसे बड़ा था और उसके तृतीय पुत्र का नाम यादवेन्द्र था। यादवेन्द्र का पुत्र नन्दकिशोर, उसका पुत्र निधिकृष्ण, उसका पुत्र चैतन्यचाण्ड, उसका पुत्र कृष्णमोहन, उसका पुत्र जगनमोहन, उसका पुत्र व्रजनाथ और उसका भी पुत्र श्यामलाल गोस्वामी था। यह वीरभ्रद गोसांइ के वंशजों की वंशावली है, जिसका उल्लेख भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर ने किया है।

ঈশ্বর হইয়া কহায় মহা-ভাগবত ।
বেদ-ধর্মাতীত হঞা বেদ-ধর্মে রত ॥৯॥

**ईश्वर हइया कहाय महा-भागवत ।**
**वेद-धर्मातीत हञा वेद-धर्मे रत ॥ ९ ॥**

**ईश्वर**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्; **हइया**—होकर; **कहाय**—अपने आपको कहलाते हैं; **महा-भागवत**—महान् भक्त; **वेद-धर्म**—वैदिक धर्म के सिद्धान्त; **अतीत**—परे; **हञा**—होकर; **वेद-धर्मे**—वैदिक प्रणाली में; **रत**—लगे रहे।

**अनुवाद**

**यद्यपि वीरभद्र गोसांइ पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् थे, किन्तु उन्होंने अपने आपको महान् भक्त के रूप में प्रस्तुत किया। यद्यपि भगवान् सारे वैदिक आदेशों से परे होते हैं, किन्तु वे वैदिक अनुष्ठानों का दृढ़तापूर्वक पालन करते थे।**

অন্তরে ঈশ্বর-চেষ্টা, বাহিরে নির্দম্ভ ।
চৈতন্য-ভক্তি-মণ্ডপে তেঁহো মূল-স্তম্ভ ॥১০॥

**अन्तरे ईश्वर-चेष्टा, बाहिरे निर्दम्भ ।**
**चैतन्य-भक्ति-मण्डपे तेंहो मूल-स्तम्भ ॥ १० ॥**

**अन्तरे**—अपने अन्दर; **ईश्वर-चेष्टा**—भगवान् के कार्यकलाप; **बाहिरे**—बाहर से; **निर्दम्भ**—अहंकार रहित; **चैतन्य-भक्ति-मण्डपे**—चैतन्य महाप्रभु के भक्तिमय कक्ष में; **तेंहो**—वे हैं; **मूल-स्तम्भ**—मुख्य स्तम्भ।

**अनुवाद**

**वे श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा निर्मित भक्ति रूपी भवन के मुख्य स्तम्भ हैं। वे अपने अंतःकरण से जानते थे कि वे भगवान् विष्णु के रूप में कार्य करते थे, किन्तु बाहर से वे गर्वरहित थे।**

অদ্যাপি যাঁহার কৃপা-মহিমা হইতে ।
চৈতন্য-নিত্যানন্দ গায় সকল জগতে ॥১১॥

**अद्यापि य्राँहार कृपा-महिमा हइते ।**
**चैतन्य-नित्यानन्द गाय सकल जगते ॥ ११ ॥**

**अद्यापि**—आज तक; **य्राँहार**—जिनकी; **कृपा**—कृपा; **महिमा**—महिमा; **हइते**—से; **चैतन्य-नित्यानन्द**—श्री चैतन्य नित्यानन्द; **गाय**—गाते हैं; **सकल**—सब; **जगते**—विश्व में।

**अनुवाद**

**श्री वीरभद्र गोसांइ की महिमामयी कृपा से अब सारे विश्व के लोगों**

**को चैतन्य तथा नित्यानन्द के नामों का कीर्तन करने का अवसर प्राप्त हुआ।**

সেই বীরভদ্র-গোসাঞির লইনু শরণ ।
যাঁহার প্রসাদে হয় অভীষ্ট-পূরণ ॥ ১২॥

**सेइ वीरभद्र-गोसाञिर लइनु शरण ।**
**ग्राँहार प्रसादे हय अभीष्ट-पूरण ॥ १२॥**

**सेइ**—उन; **वीरभद्र-गोसाञिर**—श्री वीरभद्र गोसांइ की; **लइनु**—मैं लेता हूँ; **शरण**—शरण; **ग्राँहार**—जिनकी; **प्रसादे**—कृपा से; **हय**—ऐसा होता है; **अभीष्ट-पूरण**—इच्छा-पूर्ति।

अनुवाद

**अतएव मैं वीरभद्र गोसांइ के चरणकमलों की शरण ग्रहण करता हूँ, जिससे श्रीचैतन्य-चरितामृत लिखने की मेरी बड़ी अभिलाषा का सही ढंग से मार्गदर्शन हो सके।**

শ্রী-রামদাস আর, গদাধর দাস ।
চৈতন্য-গোসাঞির ভক্ত রহে তাঁর পাশ ॥ ১৩॥

**श्री-रामदास आर, गदाधर दास ।**
**चैतन्य-गोसाञिर भक्त रहे ताँर पाश ॥ १३॥**

**श्री-रामदास**—श्री रामदास; **आर**—और; **गदाधर दास**—गदाधर दास; **चैतन्य-गोसाञिर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **भक्त**—भक्त; **रहे**—रहते थे; **ताँर पाश**—उनके साथ।

अनुवाद

**श्री चैतन्य महाप्रभु के दो भक्त श्री रामदास तथा गदाधर दास सदैव श्री वीरभद्र गोसांइ के साथ रहते थे।**

तात्पर्य

श्री रामदास, जिनका नाम बाद में अभिराम ठाकुर पड़ा, श्री नित्यानन्द प्रभु के बारह गोपालों अथवा ग्वाल सखाओं में से एक थे। *गौरगणोद्देश-दीपिका* (१२६) में कहा गया है कि श्री रामदास पहले श्रीदामा थे। *भक्तिरत्नाकर* (चतुर्थ लहर) में श्रील अभिराम ठाकुर का विवरण मिलता है। श्री नित्यानन्द प्रभु की आज्ञा से अभिराम ठाकुर महान् आचार्य तथा चैतन्य भक्ति सम्प्रदाय

के प्रचारक बने। वे अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्ति थे और अभक्त लोग उनसे अत्यन्त भयभीत रहते थे। श्री नित्यानन्द प्रभु से शक्ति पाकर वे सदैव भावदशा में रहते थे और समस्त पतितात्माओं पर अत्यन्त कृपालु थे। कहा जाता है कि यदि वे शालिग्राम शिला के अतिरिक्त किसी अन्य पत्थर को नमस्कार कर देते, तो वह तुरन्त टूट जाता था।

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर अपने *अनुभाष्य* में लिखते हैं, "हावड़ा से हुगली जिले के आम्टा गाँव जाने वाली छोटी रेलवे लाइन पर चाँपाडाँगा रेलवे स्टेशन से १० मील दक्षिण-पश्चिम में खानाकूल-कृष्णनगर गाँव है, जहाँ अभिराम ठाकुर का मन्दिर स्थित है। वर्षा के दिनों में जब यहाँ जल भर जाता है, तो एक दूसरी रेलवे लाइन से जाना पड़ता है, जिसे अब दक्षिण-पूर्व रेलवे कहते हैं। इस लाइन पर कोलाघाट नामक एक रेलवे स्टेशन है, जिससे राणीचक तक एक स्टीमर से जाना होता है। खानाकूल इस स्थान से साढ़े सात मील उत्तर में है। जहाँ अभिराम ठाकुर पूजा करते थे, वह मन्दिर कृष्णनगर में है, जो खाना (द्वारकेश्वर नदी) के *कूल* (किनारा) पर है। इसीलिए यह स्थान खानाकूल कृष्णनगर के नाम से विख्यात है। इस मन्दिर के बाहर एक बकुल वृक्ष है। यह स्थान सिद्धबकुलकुंज कहलाता है। कहा जाता है कि जब अभिराम ठाकुर यहाँ आये थे, तब वे इस वृक्ष के नीचे बैठे थे। प्रतिवर्ष खानाकूल कृष्णनगर में चैत्र (मार्च-अपैल) मास की कृष्णसप्तमी को (कृष्णपक्ष की सातवीं तिथि को) एक भारी मेला लगता है, जिसमें हजारों लोग एकत्र होते हैं। जहाँ अभिराम ठाकुर पूजा किया करते थे, उस मन्दिर का इतिहास पुराना है। इस मन्दिर के अर्चाविग्रह गोपीनाथ कहलाते हैं। इस मन्दिर के निकट अनेक सेवाइत परिवार रह रहे हैं। कहा जाता है कि अभिराम ठाकुर के पास एक कोड़ा था। वे जिसे भी इससे छू लेते, वह तुरन्त उन्नत कृष्ण-भक्त बन जाता था। उनके अनेक शिष्यों में श्रीमान् श्रीनिवास आचार्य सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं प्रिय थे, किन्तु यह सन्देहास्पद है कि वे उनके दीक्षा-प्राप्त शिष्य थे।"

নিত্যানন্দে আজ্ঞা দিল যবে গৌড়ে যাইতে ।
মহাপ্রভু এই দুই দিলা তাঁর সাথে ॥১৪॥

অতএব দুই-গণে দুঁহার গণন ।
মাধব-বাসুদেব ঘোষেরও এই বিবরণ ॥ ১৫ ॥

**नित्यानन्दे आज्ञा दिल यबे गौड़े याइते ।**
**महाप्रभु एइ दुइ दिला ताँर साथे ॥ १४ ॥**
**अतएव दुइ-गणे दुँहार गणन ।**
**माधव-वासुदेव घोषेरओ एइ विवरण ॥ १५ ॥**

**नित्यानन्दे**—भगवान् नित्यानन्द को; **आज्ञा**—आज्ञा; **दिल**—दी; **यबे**—जब; **गौड़े**—बंगाल को; **याइते**—जाने के लिए; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **एइ दुइ**—ये दोनों; **दिला**—दिया; **ताँर साथे**—उनके साथ; **अतएव**—अतएव; **दुइ-गणे**—दोनों दलों में; **दुँहार**—उनमें से दो; **गणन**—गिने जाते हैं; **माधव**—माधव; **वासुदेव**—वासुदेव; **घोषेरओ**—घोष उपनाम के; **एइ**—यह; **विवरण**—वर्णन।

## अनुवाद

**जब नित्यानन्द प्रभु को बंगाल जाकर प्रचार करने का आदेश दिया गया, तब इन दोनों भक्तों ( श्री रामदास तथा गदाधर दास ) को उनके साथ जाने का आदेश मिला था। इसलिए कभी इन्हें श्री चैतन्य महाप्रभु के और कभी नित्यानन्द प्रभु के भक्तों के रूप में गिना जाता है। इसी प्रकार माधव घोष तथा वासुदेव घोष भी भक्तों के दोनों समूहों से साथ-साथ सम्बन्धित थे।**

## तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर अपने *अनुभाष्य* में लिखते हैं, "बर्दवान जिले में अग्रद्वीप रेलवे स्टेशन तथा पाटुलि के निकट दाँइहाट नामक स्थान में अब भी श्री गोपीनाथजी का विग्रह स्थित है। यह विग्रह गोविन्द घोष को अपना पिता मानते थे। आज भी यह विग्रह गोविन्द घोष की बरसी के अवसर पर श्राद्ध उत्सव मनाते हैं। इस विग्रह के मन्दिर की व्यवस्था कृष्णनगर के राजवंश परिवार द्वारा की जाती है, जिसके सदस्य राजा कृष्णचन्द्र के वंशज हैं। प्रतिवर्ष वैशाख मास में *बारदोल* उत्सव के अवसर पर इस गोपीनाथ-विग्रह को कृष्णनगर ले जाया जाता है। यह अनुष्ठान अन्य ग्यारह विग्रहों के साथ सम्पन्न किया जाता है और फिर श्री गोपीनाथजी के विग्रह को पुनः अग्रद्वीप के मन्दिर में लाया जाता है।"

রামদাস—মুখ্য-শাখা, সখ্য-প্রেম-রাশি ।
ষোলসাঙ্গের কাষ্ঠ যেই তুলি' কৈল বংশী ॥১৬॥

**रामदास—मुख्य-शाखा, सख्य-प्रेम-राशि ।**
**षोलसाङ्गेर काष्ठ ग्रेइ तुलि' कैल वंशी ॥ १६ ॥**

**राम-दास**—राम दास; **मुख्य-शाखा**—मुख्य शाखा; **सख्य-प्रेम-राशि**—सख्य-प्रेम से परिपूर्ण; **षोलस-अङ्गेर**—सोलह गांठ वाली; **काष्ठ**—लकड़ी; **ग्रेइ**—वह; **तुलि'**—उठाकर; **कैल**—बनाई; **वांशी**—बांसुरी।

### अनुवाद

**शाखाओं में एक मुख्य शाखा, राम दास भगवान् के सख्य प्रेम से परिपूर्ण थे। उन्होंने सोलह गाँठों वाली लकड़ी की एक बाँसुरी बनाई थी।**

গদাধর দাস গোপীভাবে পূর্ণানন্দ ।
যাঁর ঘরে দানকেলি কৈল নিত্যানন্দ ॥১৭॥

**गदाधर दास गोपीभावे पूर्णानन्द ।**
**ग्राँर घरे दानकेलि कैल नित्यानन्द ॥ १७ ॥**

**गदाधर दास**—गदाधर दास; **गोपी-भावे**—गोपियों के भाव में; **पूर्ण-आनन्द**—दिव्य आनन्द से परिपूर्ण; **ग्राँर घरे**—जिनके घर में; **दान-केलि**—दान केली लीला का आयोजन; **कैल**—किया; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु।

### अनुवाद

**श्रील गदाधर दास सदैव गोपी-भाव में मग्न रहते थे। इनके घर में भगवान् नित्यानन्द ने दानकेलि नाटक का अभिनय किया था।**

শ্রী-মাধব ঘোষ—মুখ্য কীর্তনীয়া-গণে ।
নিত্যানন্দ-প্রভু নৃত্য করে যাঁর গানে ॥১৮॥

**श्री-माधव घोष—मुख्य कीर्तनीया-गणे ।**
**नित्यानन्द-प्रभु नृत्य करे ग्राँर गाने ॥ १८ ॥**

**श्री-माधव घोष**—श्री माधवघोष; **मुख्य**—मुख्य; **कीर्तनीया-गणे**—संकीर्तन करने वालों में; **नित्यानन्द-प्रभु**—नित्यानन्द प्रभु; **नृत्य**—नृत्य; **करे**—करते हैं; **ग्राँर**—जिनके; **गाने**—गान में।

अनुवाद

**श्री माधव घोष मुख्य कीर्तनिया थे। जब वे गाते थे, तब नित्यानन्द प्रभु नृत्य करते थे।**

বাসুদেব গীতে করে প্রভুর বর্ণনে ।
কাষ্ঠ-পাষাণ দ্রবে যাহার শ্রবণে ॥১৯॥

**वासुदेव गीते करे प्रभुर वर्णने ।**
**काष्ठ-पाषाण द्रवे ग्राहार श्रवणे ॥ १९ ॥**

**वासुदेव**—वासुदेव; **गीते**—गाते समय; **करे**—करते; **प्रभुर**—नित्यानन्द प्रभु तथा श्री चैतन्य महाप्रभु के; **वर्णने**—वर्णन में; **काष्ठ**—लकड़ी; **पाषाण**—पत्थर; **द्रवे**—पिघल गये; **ग्राहार**—जिनके; **श्रवणे**—सुनने से।

अनुवाद

**जब वासुदेव घोष कीर्तन करते हुए चैतन्य महाप्रभु तथा नित्यानन्द प्रभु का वर्णन करते, तो उसे सुनकर तो लकड़ी तथा पत्थर भी पिघल जाते।**

মুরারি-চৈতন্য-দাসের অলৌকিক লীলা ।
ব্যাঘ্র-গালে চড় মারে, সর্প-সনে খেলা ॥২০॥

**मुरारि-चैतन्य-दासेर अलौकिक लीला ।**
**व्याघ्र-गाले चड़ मारे, सर्प-सने खेला ॥ २० ॥**

**मुरारि**—मुरारी; **चैतन्य-दासेर**—चैतन्य महाप्रभु के दास की; **अलौकिक**—असाधारण; **लीला**—लीलाएँ; **व्याघ्र**—बाघ; **गाले**—गाल पर; **चड़ मारे**—थप्पड़ मारते; **सर्प**—सांप; **सने**—सहित; **खेला**—खेलते।

अनुवाद

**श्री चैतन्य महाप्रभु के महान् भक्त मुरारि अनेक अलौकिक कार्य करते रहते थे। कभी वे भावातिरेक में बाघ के मुंह पर चपत लगाते थे और कभी विषैले सर्प से खेलते थे।**

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर अपने *अनुभाष्य* में लिखते हैं, "मुरारि

चैतन्य दास का जन्म सर-वृन्दावन-पुर गाँव में हुआ था, जो बर्दवान रेलवे लाइन पर स्थित गलशी स्टेशन से लगभग २ मील की दूरी पर है। जब मुरारि चैतन्य दास नवद्वीप आये, तो वे मोदद्रुम या मामगाछि गाँव में आकर बसे। उस समय वे शार्ङ्ग या सारंग मुरारि चैतन्य दास नाम से प्रसिद्ध हो गये। उनके वंशज आज भी सरेर पाट में रह रहे हैं। *चैतन्य भागवत* (अन्त्यखण्ड, अध्याय ५) में निम्नलिखित वृत्तान्त मिलता है, 'मुरारि चैतन्य दास का कोई भौतिक शारीरिक रूप न था, क्योंकि वे पूरी तरह आध्यात्मिक थे। अतएव वे कभी जंगल में बाघों का पीछा करते और उनके साथ कुत्ते-बिल्लियों जैसा व्यवहार करते। वे बाघ के गाल पर चाँटा मारते और अपनी गोद में विषैला साँप ले लेते। उन्हें अपने बाह्य शरीर का डर नहीं था, क्योंकि इसके बारे में वे पूर्णतया विस्मृत अवस्था में रहते थे। वे हरे कृष्ण महामन्त्र का कीर्तन करने या भगवान् चैतन्य तथा नित्यानन्द के विषय में बातें करने में सारा दिन बिता सकते थे। कभी-कभी वे दो-तीन दिनों तक पानी में डूबे रहते थे, किन्तु फिर भी उन्हें कोई शारीरिक असुविधा नहीं होती थी। इसी तरह वे पत्थर या काठ जैसा आचरण करते, किन्तु वे सदैव अपनी शक्ति का उपयोग हरे कृष्ण महामन्त्र का कीर्तन करने में करते। कोई भी व्यक्ति उनके विशिष्ट गुणों का वर्णन नहीं कर सकता, किन्तु कहा जाता है कि मुरारि चैतन्य दास जहाँ-जहाँ जाते और जो भी वहाँ उपस्थित होता, वह उनके प्रभाव मात्र से कृष्णभावनामृतमय हो उठता।'"

নিত্যানন্দের গণ যত—সব ব্রজ-সখা ।
শৃঙ্গ-বেত্র-গোপবেশ, শিরে শিখি-পাখা ॥২১॥

**नित्यानन्देर गण यत—सब व्रज-सखा ।**
**शृङ्ग-वेत्र-गोपवेश, शिरे शिखि-पाखा ॥ २१ ॥**

**नित्यानन्देर**—नित्यानन्द प्रभु के; **गण**—अनुयायी; **यत**—सब; **सब**—सब; **व्रज-सखा**—वृन्दावन के निवासी; **शृङ्ग**—सींग, शृंग; **वेत्र**—बांस की छड़ी; **गोप-वेश**—गोप के वेश में; **शिरे**—सिर पर; **शिखि-पाखा**—मोर पंख।

**अनुवाद**

**नित्यानन्द प्रभु के सारे पार्षद पहले व्रजभूमि के ग्वालबाल थे। उनके**

**हाथों में शृंग तथा छड़ी, उनकी ग्वालों की वेशभूषा तथा उनके सिरों पर मोर पंख उनके प्रतीक थे।**

### तात्पर्य

नित्यानन्द के अनुयायियों की सूची में जाह्नवा माता का भी नाम है। उनका वर्णन *गौरगणोद्देश-दीपिका* (६६) में वृन्दावन की अनंगमंजरी के रूप में मिलता है। जाह्नवा माता के सारे भक्तों की गिनती श्री नित्यानन्द प्रभु के भक्तों की सूची में की जाती है।

রঘুনাথ বৈদ্য উপাধ্যায় মহাশয় ।
যাঁহার দর্শনে কৃষ্ণ-প্রেম-ভক্তি হয় ॥২২॥

**रघुनाथ वैद्य उपाध्याय महाशय ।**
**य़ाँहार दर्शने कृष्ण-प्रेम-भक्ति हय ॥ २२ ॥**

**रघुनाथ वैद्य**—रघुनाथ वैद्य; **उपाध्याय महाशय**—उपाध्याय की उपाधि के साथ एक महान् व्यक्ति; **य़ाँहार**—जिनके; **दर्शने**—दर्शन से; **कृष्ण-प्रेम**—कृष्ण-प्रेम; **भक्ति**—भक्ति; **हय**—जाग उठे।

### अनुवाद

**रघुनाथ वैद्य का एक अन्य नाम उपाध्याय भी था। वे इतने बड़े भक्त थे कि उनके दर्शन-मात्र से मनुष्य का सुप्त भगवत्प्रेम जाग्रत हो उठता था।**

সুন্দরানন্দ——নিত্যানন্দের শাখা, ভৃত্য মর্ম ।
যাঁর সঙ্গে নিত্যানন্দ করে ব্রজ-নর্ম ॥২৩॥

**सुन्दरानन्द——नित्यानन्देर शाखा, भृत्य मर्म ।**
**य़ाँर सङ्गे नित्यानन्द करे व्रज-नर्म ॥ २३ ॥**

**सुन्दरानन्द**—सुन्दरानन्द; **नित्यानन्देर शाखा**—नित्यानन्द प्रभु की एक शाखा; **भृत्य मर्म**—एक अंतरंग सेवक; **य़ाँर सङ्गे**—जिनके साथ; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु; **करे**—करते हैं; **व्रज-नर्म**—वृन्दावन के कार्यकलाप।

### अनुवाद

**श्री नित्यानन्द प्रभु की अन्य शाखा, सुन्दरानन्द उनके घनिष्ठ दास थे। उनके संग में नित्यानन्द प्रभु को व्रजभूमि के जीवन की अनुभूति होती थी।**

**तात्पर्य**

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर अपने *अनुभाष्य* में लिखते हैं, "*चैतन्य-भागवत* (अन्त्यखण्ड, अध्याय ५) में बतलाया गया है कि सुन्दरानन्द भगवत्प्रेम के सागर तथा श्री नित्यानन्द प्रभु के मुख्य पार्षद थे। *गौरगणोद्देश-दीपिका* (१२७) में उन्हें कृष्णलीला के सुदामा बतलाया गया है। इस प्रकार जब बलराम नित्यानन्द प्रभु के रूप में अवतरित हुए, तो उनके साथ के बारह गोपों में सुन्दरानन्द भी एक थे। जिस पवित्र स्थान में सुन्दरानन्द रहते थे, वह कलकत्ता से बर्दवान जाने वाली पूर्वी रेलवे के माजदिया स्टेशन से लगभग १४ मील पूर्व स्थित महेशपुर गाँव था। यह स्थान जेशोर जिले में है, जो अब बाँग्लादेश में है। इस गाँव के ध्वंसावशेषों में एकमात्र सुन्दरानन्द का ही पुराना रिहायशी घर अभी भी स्थित है। इस गाँव के सिरे पर एक *बाउल* (नकली वैष्णव) रहता है और गाँव के सारे मन्दिर तथा घर नवनिर्मित प्रतीत होते हैं। महेशपुर में श्री राधावल्लभ तथा श्री श्रीराधारमण के अर्चाविग्रह हैं। मन्दिर के निकट वेत्रवती नामक एक छोटी-सी नदी है।

"सुन्दरानन्द प्रभु *नैष्ठिक ब्रह्मचारी* थे—उन्होंने जीवन भर विवाह नहीं किया। अतएव उनके शिष्यों के अतिरिक्त प्रत्यक्ष रूप से उनका और कोई वंशज नहीं था, किन्तु उनके परिवार के वंशज अब भी बीरभूम जिले के मंगलडीहि गाँव में रह रहे हैं। उसी गाँव में बलराम का एक मन्दिर है, जहाँ अर्चाविग्रह की नियमित पूजा की जाती है। महेशपुर का मूल विग्रह राधावल्लभ बरहामपुर के सैदाबाद गोस्वामियों द्वारा ले जाया गया और जब से वहाँ वर्तमान विग्रहों की स्थापना हुई, तब से उसकी पूजा की देख-रेख महेशपुर का एक जमींदार परिवार करता है। माघ मास (जनवरी-फरवरी) की पूर्णिमा के दिन सुन्दरानन्द का तिरोधान उत्सव मनाया जाता है और इस उत्सव को मनाने के लिए आसपास के लोग एकत्र होते हैं।"

কমলাকর পিপ্পলাই—অলৌকিক রীত ।
অলৌকিক প্রেম তাঁর ভুবনে বিদিত ॥২৪॥

**कमलाकर पिप्पलाइ—अलौकिक रीत ।**
**अलौकिक प्रेम ताँर भुवने विदित ॥ २४॥**

**कमलाकर पिप्पलाइ**—कमलाकर पिप्लाई; **अलौकिक**—असाधारण; **रीत**—व्यवहार; **अलौकिक**—असाधारण; **प्रेम**—भगवत्प्रेम; **ताँर**—उनका; **भुवने**—संसार में; **विदित**—प्रसिद्ध।

### अनुवाद

**कहा जाता है कि कमलाकर पिप्पलाइ तीसरे गोपाल थे। उनका व्यवहार तथा उनका भगवत्प्रेम अलौकिक था। अतः वे विश्वविदित हैं।**

### तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर अपने *अनुभाष्य* में लिखते हैं, "*गौरगणोद्देश-दीपिका* (१२८) में कमलाकर पिप्पलाइ को तीसरा गोपाल कहा गया है। इनका पहले का नाम महाबल था। कमलाकर पिप्पलाइ ने ही श्रीरामपुर के महेश गाँव में जगन्नाथ-विग्रह की स्थापना की थी। यह माहेश गाँव श्रीरामपुर रेलवे स्टेशन से ढाई मील की दूरी पर है। कमलाकर पिप्पलाइ का वंश-वृक्ष इस प्रकार है—उनके पुत्र का नाम चतुर्भुज था, जिसके दो पुत्र थे—नारायण तथा जगन्नाथ। नारायण को एक पुत्र हुआ जगदानन्द, जिसके पुत्र का नाम राजीवलोचन था। राजीवलोचन के समय में जगन्नाथ-विग्रह की पूजा करने के लिए धन की कमी हुई और कहा जाता है कि ढाका के नवाब शाह सुजा ने १०६० बंगाब्द (१६५३ ई.) में ११८५ बीघे (लगभग ३९५ एकड़) जमीन दान की। यह जमीन जगन्नाथ के अधिकार में होने से गाँव का नाम जगन्नाथपुर पड़ा। कहा जाता है कि जब कमलाकर पिप्पलाइ ने घर छोड़ दिया, तो उनके छोटे भाई निधिपति पिप्पलाइ ने उनकी खोज की और कुछ समय के बाद उन्हें माहेश गाँव में ढूँढ निकाला। निधिपति ने भरसक प्रयत्न किया कि उसका बड़ा भाई गाँव लौट चले, किन्तु वैसा हो नहीं पाया। फलस्वरूप निधिपति पिप्पलाई अपना सारा परिवार लेकर माहेश गाँव में रहने चले आये। आज भी इस परिवार के लोग माहेश गाँव के पड़ोस में रह रहे हैं। उनका कुलनाम अधिकारी है और वे ब्राह्मण परिवार के हैं।

"माहेश गाँव में जगन्नाथ मन्दिर का इतिहास इस प्रकार है। ध्रुवानन्द नामक एक भक्त एक बार जगन्नाथ पुरी में जगन्नाथ, बलराम तथा सुभद्रा का दर्शन करने गया। वह जगन्नाथजी को अपने हाथ का पकाया भोजन अर्पित

करना चाहता था। उसकी ऐसी इच्छा होने के कारण एक रात को उसे स्वप्न में जगन्नाथजी दिखे, जिन्होंने उससे गंगा नदी के तट पर माहेश नामक स्थान में जाकर एक मन्दिर में उनकी पूजा शुरू करने के लिए कहा। इस तरह ध्रुवानन्द माहेश गाँव गया, जहाँ उसने गंगा में जगन्नाथ, बलराम तथा सुभद्रा इन तीन अर्चाविग्रहों को तैरते देखा। वह इन्हें उठाकर ले आया और इन्हें एक छोटीसी झोपड़ी में स्थापित करके जगन्नाथजी की मुदित मन से पूजा करने लगा। जब वह बूढ़ा हो गया, तो वह उत्सुक था कि इसका भार किसी विश्वसनीय व्यक्ति को सौंप दे और स्वप्न में जगन्नाथजी ने अनुमति दे दी कि अगले दिन जो भी व्यक्ति मिले उसे यह भार सौंप दे। अगली सुबह उसकी भेंट कमलाकर पिप्पलाइ से हुई, जो पहले बंगाल के सुन्दरवन इलाके के खालिजुलि गाँव के निवासी थे, शुद्ध वैष्णव थे तथा भगवान् जगन्नाथ के महान् भक्त थे। इस तरह उन्होंने तुरन्त ही उसे यह भार सौंप दिया और कमलाकर पिप्पलाइ जगन्नाथजी के पुजारी बन गये। तब से उसके परिवार के लोग *अधिकारी* कहे जाते हैं, अर्थात् 'जिसे भगवान् की पूजा करने का अधिकार प्राप्त है।' ये अधिकारी सम्मानित ब्राह्मण परिवार के हैं। पाँच प्रकार के कुलीन ब्राह्मण पिप्पलाइ कहलाते हैं।"

সূর্যদাস সরখেল, তাঁর ভাই কৃষ্ণদাস ।
নিত্যানন্দে দৃঢ় বিশ্বাস, প্রেমের নিবাস ॥২৫॥

**सूर्यदास सरखेल, ताँर भाइ कृष्णदास ।**
**नित्यानन्दे दृढ़ विश्वास, प्रेमेर निवास ॥ २५ ॥**

**सूर्यदास सरखेल**—सूर्यदास सरखेल; **ताँर भाइ**—उसका भाई; **कृष्णदास**—कृष्णदास; **नित्यानन्दे**—नित्यानन्द प्रभु में; **दृढ़ विश्वास**—दृढ़ विश्वास; **प्रेमेर निवास**—भगवत्-प्रेम के आगार।

### अनुवाद

**सूर्यदास सरखेल तथा उनके छोटे भाई कृष्णदास सरखेल को नित्यानन्द प्रभु में दृढ़ विश्वास था। वे दोनों भगवत्प्रेम के आगार थे।**

### तात्पर्य

*भक्तिरत्नाकर* (बारहवीं लहर) में कहा गया है कि नवद्वीप से कुछ मील की दूरी पर शालिग्राम नामक एक स्थान है, जहाँ पर सूर्यदास सरखेल का आवास था। उस समय वे मुस्लिम-सरकार में सचिव के पद पर थे और उन्होंने काफी धन एकत्र कर लिया था। सूर्यदास के चार भाई थे और सबके सब शुद्ध वैष्णव थे। इनकी दो पुत्रियाँ थीं—वसुधा तथा जाह्नवा।

গৌরীদাস পণ্ডিত যাঁর প্রেমোদ্দণ্ড-ভক্তি ।
কৃষ্ণ-প্রেমা দিতে, নিতে, ধরে মহাশক্তি ॥২৬॥

**गौरीदास पण्डित य्राँर प्रेमोद्दण्ड-भक्ति ।**
**कृष्ण-प्रेमा दिते, निते, धरे महाशक्ति ॥ २६ ॥**

**गौरीदास पण्डित**—गौरीदास पण्डित; **य्राँर**—जिनका; **प्रेम-उद्दण्ड-भक्ति**—भगवत्प्रेम तथा भक्ति में बहुत उन्नत; **कृष्ण-प्रेमा**—कृष्ण-प्रेम; **दिते**—देने के लिए; **निते**—और लेने के लिए; **धरे**—अधिकृत; **महाशक्ति**—महान् शक्ति।

### अनुवाद

**भगवत्प्रेम में सर्वोच्च भक्ति के प्रतीक गौरीदास पण्डित में ऐसा प्रेम प्राप्त करने और उसे प्रदान करने की महान् शक्ति थी।**

### तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर अपने *अनुभाष्य* में लिखते हैं, "कहा जाता है कि गौरीदास पण्डित को हरिहोड़ के पुत्र राजा कृष्णदास का राज्याश्रय प्राप्त था। गौरीदास पण्डित शालिग्राम गाँव में रहते थे, जो मुड़ागाछा रेलवे स्टेशन से कुछ दूरी पर है। बाद में वे अम्बिका कालना गाँव में आकर रहने लगे। *गौरगणोद्देश-दीपिका* (१२८) में कहा गया है कि वे पहले वृन्दावन में कृष्ण तथा बलराम के ग्वालमित्रों में से सुबल नामक गोप थे। गौरीदास पण्डित सूर्यदास सरखेल के छोटे भाई थे । वे अपने बड़े भाई की अनुमति से गंगा नदी के तट पर अम्बिका कालना नामक नगर में जा बसे। गौरीदास पण्डित के कुछ वंशजों के नाम इस प्रकार हैं—(१) श्री नृसिंह चैतन्य, (२) कृष्णदास, (३) विष्णुदास, (४) बड़ बलरामदास, (५) गोविन्द, (६) रघुनाथ,

(७) बड़ु गंगादास, (८) औलिया गंगाराम, (९) यादवाचार्य, (१०) हृदयचैतन्य, (११) चाँद हालदार, (१२) महेश पण्डित, (१३) मुकुट राय, (१४) भातुया गंगाराम, (१५) औलिया चैतन्य, (१६) कालिया कृष्णदास, (१७) पातुया गोपाल, (१८) बड़ जगन्नाथ, (१९) नित्यानन्द, (२०) भावि, (२१) जगदीश, (२२) राइया कृष्णदास तथा (२२१/२) अन्नपूर्णा। गौरीदास पण्डित के सबसे बड़े पुत्र बड़ा बलराम और सबसे छोटे पुत्र रघुनाथ कहलाते थे। रघुनाथ के पुत्र थे महेश पण्डित तथा गोविन्द। गौरीदास पण्डित की पुत्री का नाम था अन्नपूर्णा।

"अम्बिका कालना गाँव शान्तिपुर के सामने गंगा के उस पार पूर्वी रेलवे पर कालनाकोर्ट रेलवे स्टेशन से २ मील पूर्व में है। अम्बिका कालना गाँव में बर्दवान के जमींदार द्वारा बनवाया गया एक मन्दिर है, जिसके सामने एक बड़ा-सा इमली का पेड़ है। कहा जाता है कि गौरीदास पण्डित तथा श्री चैतन्य महाप्रभु इसी वृक्ष के नीचे मिले थे। जिस स्थान पर यह मन्दिर है, वह अम्बिका कहलाता है और चूँकि यह कालना क्षेत्र में है, अतएव यह गाँव अम्बिका-कालना कहलाता है। कहा जाता है कि इस मन्दिर में अब भी श्री चैतन्य महाप्रभु की हस्तलिखित *भगवद्गीता* की प्रति है।"

নিত্যানন্দে সমর্পিল জাতি-কুল-পাঁতি ।
শ্রী-চৈতন্য-নিত্যানন্দে করি প্রাণপতি ॥২৭॥

**नित्यानन्दे समर्पिल जाति-कुल-पाँति ।**
**श्री-चैतन्य-नित्यानन्दे करि प्राणपति ॥ २७॥**

**नित्यानन्दे**—नित्यानन्द प्रभु को; **समर्पिल**—उन्होंने भेंट किया; **जाति**—जाति-भेद; **कुल**—वंश; **पाँति**—बन्धुत्व; **श्री-चैतन्य**—भगवान् चैतन्य; **नित्यानन्दे**—नित्यानन्द प्रभु में; **करि**—बनाकर; **प्राण-पति**—अपने जीवन के स्वामी।

## अनुवाद

**भगवान् श्री चैतन्य तथा भगवान् नित्यानन्द को अपने जीवन के स्वामी बनाकर गौरीदास पण्डित ने भगवान् नित्यानन्द की सेवा के लिए सब कुछ अर्पित कर दिया, यहाँ तक कि अपने परिवार की सदस्यता भी।**

নিত্যানন্দ প্রভুর প্রিয়——পণ্ডিত পুরন্দর ।
প্রেমার্ণব-মধ্যে ফিরে যৈছন মন্দর ॥২৮॥

**नित्यानन्द प्रभुर प्रिय——पण्डित पुरन्दर ।**
**प्रेमार्णव-मध्ये फिरे ग्रैछन मन्दर ॥ २८ ॥**

**नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु; **प्रभुर**—भगवान् के; **प्रिय**—अत्यन्त प्रिय; **पण्डित पुरन्दर**—पण्डित पुरन्दर; **प्रेम-अर्णव-मध्ये**—भगवत्-प्रेम के सागर में; **फिरे**—चलते; **ग्रैछन**—ठीक उस तरह; **मन्दर**—मन्दर पर्वत।

अनुवाद

**श्री नित्यानन्द प्रभु के तेरहवें मुख्य भक्त पण्डित पुरन्दर थे। वे भगवत्प्रेम के सागर में इस तरह चलते थे मानो मन्दर पर्वत हों।**

तात्पर्य

पुरन्दर पण्डित खड़दह में श्री नित्यानन्द प्रभु से मिले थे। जब नित्यानन्द इस गाँव में गये, तो वहाँ उन्होंने अलौकिक नृत्य किया, जिस पर पुरन्दर पण्डित मोहित हो गये। वे उस समय पेड़ के ऊपर चढ़े थे और नित्यानन्द का नृत्य देखकर अपने आपको अंगद कहते हुए ऊपर से जमीन पर कूद पड़े। अंगद भगवान् रामचन्द्र की लीलाओं के समय हनुमान के खेमे के एक भक्त थे।

পরমেশ্বর-দাস——নিত্যানন্দৈক-শরণ ।
কৃষ্ণ-ভক্তি পায়, তাঁরে যে করে স্মরণ ॥২৯॥

**परमेश्वर-दास——नित्यानन्दैक-शरण ।**
**कृष्ण-भक्ति पाय, ताँरे ग्रे करे स्मरण ॥ २९ ॥**

**परमेश्वर-दास**—परमेश्वर दास; **नित्यानन्द-एक-शरण**—नित्यानन्द प्रभु के चरणकमलों के पूर्ण शरणागत; **कृष्ण-भक्ति पाय**—कृष्ण-प्रेम पाता है; **ताँरे**—उनका; **ग्रे**—जो कोई; **करे**—करता है; **स्मरण**—स्मरण।

अनुवाद

**परमेश्वर दास, जो कृष्णलीला के पाँचवे गोपाल कहे जाते हैं, वे नित्यानन्द प्रभु के चरणकमलों में पूरी तरह से समर्पित थे। जो कोई उनके इस नाम परमेश्वर दास को स्मरण करेगा, उसे सरलता से कृष्ण-प्रेम प्राप्त हो जायेगा।**

### तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर अपने *अनुभाष्य* में लिखते हैं, "*चैतन्य-भागवत* में कहा गया है कि परमेश्वर दास, जिन्हें कभी-कभी परमेश्वरी दास भी कहा जाता था, नित्यानन्द प्रभु के सर्वस्व थे। परमेश्वर दास का शरीर नित्यानन्द प्रभु की लीलाओं का स्थल था। परमेश्वर दास कुछ काल तक खड़दह गाँव में रहे और वे सदैव गोपाल (ग्वालबाल) के भाव से अभिभूत रहते थे। पूर्वजन्म में वे कृष्ण तथा बलराम के मित्र अर्जुन थे। बारह गोपालों में से वे पाँचवे थे। वे खेतरी में सम्पन्न उत्सव में श्रीमती जाह्नवा देवी के साथ गये थे। *भक्तिरत्नाकर* में कहा गया है कि श्रीमती जाह्नवा माता के आदेश से उन्होंने हुगली जिले के आटपुर स्थान पर राधा-गोपीनाथ मन्दिर की स्थापना की। आटपुर स्टेशन छोटी लाइन (नेरो गेज) पर हावड़ा तथा आमता के बीच स्थित है। आटपुर में एक दूसरा मन्दिर है, जिसे मित्र परिवार ने स्थापित किया था और वह राधा-गोविन्द मन्दिर कहलाता है। मन्दिर के सामने दो बकुल तथा एक कदम्ब वृक्ष के बीच परमेश्वर ठाकुर की समाधि है और उसके ऊपर वेदी का पत्थर है, जिस पर तुलसी का पौधा है। कहा जाता है कि कदम्ब के वृक्ष पर वर्ष में केवल एक फूल लगता है, जिसे अर्चाविग्रह पर चढ़ाया जाता है।

"यह भी कहा जाता है कि परमेश्वरी ठाकुर वैद्य परिवार के थे। उनके भाई का एक वंशज इस समय मन्दिर का पुजारी है। उनके परिवार के कुछ लोग अब भी हुगली जिले में चण्डीतला डाकघर के पास रह रहे हैं। परमेश्वरी ठाकुर के वंशजों ने ब्राह्मण परिवारों से कई शिष्य बनाये, किन्तु धीरे-धीरे ये वंशज वैद्य का पेशा करने लगे, तो ब्राह्मण परिवारों के लोगों ने शिष्य बनना बन्द कर दिया। परमेश्वरी के वंशजों के कुल-नाम अधिकारी तथा गुप्त हैं। दुर्भाग्यवश उनके परिवार के वंशज अर्चाविग्रह की प्रत्यक्ष पूजा नहीं करते, किन्तु इस कार्य के लिए उन्होंने वेतन-भोगी ब्राह्मण लगा रखे हैं। इस मन्दिर में सिंहासन पर बलदेव तथा श्री श्री राधा-गोपीनाथ एकसाथ हैं। माना जाता है कि बलदेव-विग्रह की स्थापना बाद में की गई, क्योंकि रस की दृष्टि से बलदेव, कृष्ण तथा राधा एक ही सिंहासन पर नहीं रह सकते। वैशाख मास (अप्रैल-मई) की

पूर्णिमा के दिन इस मन्दिर में परमेश्वरी ठाकुर का तिरोधान-उत्सव मनाया जाता है।"

জগদীশ পণ্ডিত হয় জগৎপাবন ।
কৃষ্ণ-প্রেমামৃত বর্ষে, যেন বর্ষা ঘন ॥৩০॥

**जगदीश पण्डित हय जगत्पावन ।**
**कृष्ण-प्रेमामृत वर्षे, य्रेन वर्षा घन ॥ ३० ॥**

**जगदीश पण्डित**—जगदीश पण्डित; **हय**—हैं; **जगत्-पावन**—संसार के उद्धारक; **कृष्ण-प्रेम-अमृत वर्षे**—वे सदा भक्ति की वर्षा बरसाते हैं; **य्रेन**—भाँति; **वर्षा**—वर्षा; **घन**—जोर की।

**अनुवाद**

**नित्यानन्द के अनुयायियों की पन्द्रहवीं शाखा, जगदीश पण्डित सम्पूर्ण जगत् के उद्धारक थे। उनसे कृष्ण-प्रेम भक्ति की बौछार ऐसी बहती थी, मानों बरसात की झड़ी लगी हो।**

**तात्पर्य**

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर अपने *अनुभाष्य* में लिखते हैं, "*चैतन्य-भागवत* (आदिखण्ड, अध्याय ६) तथा *चैतन्य-चरितामृत* (आदिलीला, अध्याय १४) में जगदीश पण्डित विषयक विवरण प्राप्त है। वे नदिया जिले में चाकदह रेलवे स्टेशन के निकट यशदा गाँव के थे। उनके पिता कमलाक्ष, भट्ट नारायण के पुत्र थे। उनके माता-पिता दोनों ही भगवान् विष्णु के महान् भक्त थे। उनकी मृत्यु के बाद जगदीश अपनी पत्नी दु:खिनी तथा भाई महेश के साथ अपनी जन्मभूमि छोड़कर जगन्नाथ मिश्र तथा अन्य वैष्णवों की संगति में रहने के लिए श्री मायापुर आ गये। चैतन्य महाप्रभु ने जगदीश को जगन्नाथ पुरी जाकर हरिनाम-संकीर्तन आन्दोलन का प्रचार करने का आदेश दिया। जगन्नाथ पुरी से लौटने के बाद उन्होंने जगन्नाथ भगवान् के आदेश से यशदा ग्राम में जगन्नाथ के अर्चाविग्रहों की स्थापना की। कहा जाता है कि जगदीश पण्डित जगन्नाथ के भारी अर्चाविग्रह को एक लाठी में बाँधकर यशदा ग्राम तक लाये। आज भी मन्दिर के पुजारी उस लाठी को दिखलाते हैं, जिसका

उपयोग जगदीश पण्डित द्वारा जगन्नाथ के विग्रह को लाने के लिए किया गया था।

নিত্যানন্দ-প্রিয়ভৃত্য পণ্ডিত ধনঞ্জয় ।
অত্যন্ত বিরক্ত, সদা কৃষ্ণ-প্রেমময় ॥ ৩১ ॥

**नित्यानन्द-प्रियभृत्य पण्डित धनञ्जय ।**
**अत्यन्त विरक्त, सदा कृष्ण-प्रेममय ॥ ३१ ॥**

**नित्यानन्द-प्रिय-भृत्य**—नित्यानन्द प्रभु के एक अन्य प्रिय सेवक; **पण्डित धनञ्जय**—पण्डित धनंजय; **अत्यन्त**—अत्यन्त; **विरक्त**—विरक्त; **सदा**—सदा; **कृष्ण-प्रेम-मय**—कृष्ण-प्रेम में लीन।

### अनुवाद

**नित्यानन्द प्रभु के सोलहवें प्रिय सेवक धनंजय पण्डित थे। वे अत्यधिक विरक्त थे और सदैव कृष्ण-प्रेम में निमग्न रहते थे।**

### तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर अपने *अनुभाष्य* में लिखते हैं, "पण्डित धनंजय कटवा में शीतल नामक गाँव के निवासी थे। वे बारह गोपालों में से एक थे। *गौरगणोद्देश-दीपिका* (१२७) के अनुसार उनका पहले का नाम वसुदाम था। शीतल ग्राम बर्दवान जिले में मंगलकोट थाने तथा कैचर डाकखाने के निकट स्थित है। कैचर एक रेलवे स्टेशन है, जो बर्दवान से कटवा जाने वाली छोटी रेलवे लाइन पर कटवा स्टेशन से लगभग ९ मील दूर है। शीतल ग्राम पहुँचने के लिए इस स्टेशन से लगभग एक मील उत्तर पूर्व जाना पड़ता है। यहाँ का मन्दिर कच्ची दीवालों से बना और फूस से ढका हुआ था। कुछ वर्ष पूर्व बाजारवन काबाशी के मल्लिक जमीदारों ने मन्दिर के लिए एक बड़ा-सा घर बनवा दिया था, किन्तु विगत ६५ वर्षों से मन्दिर टूटा हुआ है और परित्यक्त है। आज भी पुराने मन्दिर की नींव दिखती है। मन्दिर के पास एक तुलसी स्तम्भ है और प्रतिवर्ष कार्तिक (अक्टूबर-नवम्बर) मास में धनंजय पण्डित का तिरोधान-दिवस मनाया जाता है। कहा जाता है कि कुछ काल तक धनंजय पण्डित श्री चैतन्य महाप्रभु के संकीर्तन-दल में सम्मिलित रहे। फिर

वे वृन्दावन चले गये। वृन्दावन जाने के पूर्व वे कुछ समय तक मेमारी रेलवे स्टेशन से ६ मील दक्षिण साँचड़ापाँचड़ा नामक गाँव में रहे। इसीलिए कभी-कभी यह गाँव धनंजयेर-पाट भी कहलाता है। कुछ समय बाद वे पूजा का भार अपने शिष्य को सौंपकर वृन्दावन वापस चले गये। वहाँ से शीतलग्राम वापस आने पर उन्होंने मन्दिर में गौरसुन्दर का विग्रह स्थापित किया। आज भी इस गाँव में पण्डित धनञ्जय के वंशज रह रहे हैं और मन्दिर-पूजा का कार्य देखते हैं।"

মহেশ পণ্ডিত—ব্রজের উদার গোপাল ।
ঢক্কা-বাদ্যে নৃত্য করে প্রেমে মাতোয়াল ॥৩২॥

**महेश पण्डित—व्रजेर उदार गोपाल ।**
**ढक्का-वाद्ये नृत्य करे प्रेमे मातोयाल ॥ ३२ ॥**

**महेश पण्डित**—महेश पण्डित; **व्रजेर**—वृन्दावन के; **उदार**—उदार; **गोपाल**—गोपाल; **ढक्का-वाद्ये**—नगाड़ा बजाने के साथ; **नृत्य करे**—नृत्य किया करते थे; **प्रेमे**—प्रेम में; **मातोयाल**—जैसे पागल हो।

**अनुवाद**

**महेश पण्डित बारह गोपालों में सातवें गोपाल थे। ये अत्यन्त उदार थे। ये ढक्का ( नगाड़ा ) बजने पर कृष्ण-प्रेम में उन्मत्त होकर नाचा करते थे।**

**तात्पर्य**

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर अपने *अनुभाष्य* में लिखते हैं, "महेश पण्डित का गाँव पालपाड़ा नदिया जिले में चाकदह रेलवे स्टेशन से लगभग एक मील दक्षिण जंगल के भीतर स्थित है। पास ही गंगा नदी बहती है। कहा जाता है कि पहले महेश पण्डित जिराट के पूर्व में मसिपुर या यशीपुर नामक गाँव में रहते थे और जब मसिपुर गंगा नदी के पट में डूब गया, तो वहाँ के विग्रहों को पालपाड़ा गाँव लाया गया, जो बेलेडाँगा, बेरिग्राम, सुखसागर, चान्दुड़े तथा मनसापोता नामक गाँवों के बीच बसा है। (कुल १४ गाँव हैं और पूरा पड़ोस पाँचनगर परगना कहलाता है)। कहा जाता है कि महेश पण्डित

पाणिहाटी में नित्यानन्द प्रभु द्वारा सम्पन्न समारोह में सम्मिलित हुए थे। इस समारोह में नरोत्तम दास ठाकुर भी सम्मिलित हुए थे और महेश पण्डित ने इस अवसर पर उन्हें देखा था। महेश पण्डित के मन्दिर में गौर नित्यानन्द, श्री गोपीनाथ, श्री मदनमोहन, राधा-गोविन्द के विग्रहों के साथ-साथ शालग्राम शिला भी है।"

নবদ্বীপে পুরুষোত্তম পণ্ডিত মহাশয় ।
নিত্যানন্দ-নামে যাঁর মহোন্মাদ হয় ॥৩৩॥

**नवद्वीपे पुरुषोत्तम पण्डित महाशय ।**
**नित्यानन्द-नामे य्राँर महोन्माद हय ॥ ३३ ॥**

**नवद्वीपे पुरुषोत्तम**—नवद्वीप के पुरुषोत्तम; **पण्डित महाशय**—अत्यन्त विद्वान; **नित्यानन्द-नामे**—नित्यानन्द प्रभु के नाम से; **य्राँर**—जिनका; **महा-उन्माद**—अत्यन्त आनन्द; **हय**—हो जाता है।

### अनुवाद

**नवद्वीप निवासी पुरुषोत्तम पण्डित आठवें गोपाल थे। वे नित्यानन्द महाप्रभु का पवित्र नाम सुनते ही उन्मत्त से हो उठते थे।**

### तात्पर्य

*चैतन्य-भागवत* में बतलाया गया है कि पुरुषोत्तम पंडित का जन्म नवद्वीप में हुआ था और वे नित्यानन्द प्रभु के महान् भक्त थे। बारह गोपालों के रूप में उनका पहले का नाम स्तोककृष्ण था।

বলরাম দাস—কৃষ্ণ-প্রেম-রসাস্বাদী ।
নিত্যানন্দ-নামে হয় পরম উন্মাদী ॥৩৪॥

**बलराम दास—कृष्ण-प्रेम-रसास्वादी ।**
**नित्यानन्द-नामे हय परम उन्मादी ॥ ३४ ॥**

**बलराम-दास**—बलराम दास; **कृष्ण-प्रेम-रस**—कृष्ण-प्रेम में सदा लीन रहने का अमृत; **आस्वादी**—पूरी तरह चखकर; **नित्यानन्द-नामे**—श्री नित्यानन्द प्रभु के नाम में; **हय**—हो जाते; **परम**—परम; **उन्मादी**—उन्मत्त।

अनुवाद

**बलराम दास कृष्ण-प्रेम रूपी अमृत का सदैव आस्वादन करते थे। वे श्री नित्यानन्द प्रभु का नाम सुनते ही अत्यधिक उन्मत्त हो जाते थे।**

মহা-ভাগবত যদুনাথ কবিচন্দ্র ।
যাঁহার হৃদয়ে নৃত্য করে নিত্যানন্দ ॥৩৫॥

**महा-भागवत यदुनाथ कविचन्द्र ।**
**याँहार हृदये नृत्य करे नित्यानन्द ॥ ३५ ॥**

**महा-भागवत**—महान् भक्त; **यदुनाथ कविचन्द्र**—यदुनाथ कविचन्द्र; **याँहार**—जिनके; **हृदये**—हृदय में; **नृत्य**—नृत्य; **करे**—करते हैं; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु।

अनुवाद

**यदुनाथ कविचन्द्र महान् भक्त थे। उनके हृदय में श्री नित्यानन्द प्रभु सतत नृत्य करते थे।**

तात्पर्य

*चैतन्य-भागवत* (मध्यखण्ड, अध्याय १) में कहा गया है कि रत्नगर्भ नामक एक महाशय श्री चैतन्य महप्रभु के पिता के मित्र थे। दोनों एक ही गाँव के निवासी थे। रत्नगर्भ आचार्य के तीन पुत्र थे—कृष्णानन्द, जीव तथा यदुनाथ कविचन्द्र।

রাঢ়ে যাঁর জন্ম কৃষ্ণদাস দ্বিজবর ।
শ্রী-নিত্যানন্দের তেঁহো পরম কিঙ্কর ॥৩৬॥

**राढ़े याँर जन्म कृष्णदास द्विजवर ।**
**श्री-नित्यानन्देर तेंहो परम किङ्कर ॥ ३६ ॥**

**राढ़े**—पश्चिमी बंगाल में; **याँर**—जिनका; **जन्म**—जन्म; **कृष्णदास**—कृष्णदास; **द्विज-वर**—सर्वोत्तम ब्राह्मण; **श्री-नित्यानन्देर**—श्री नित्यानन्द प्रभु के; **तेंहो**—वे; **परम**—परम; **किङ्कर**—सेवक।

अनुवाद

**बंगाल में श्री नित्यानन्द के इक्कीसवें भक्त कृष्णदास ब्राह्मण थे, जो नित्यानन्द प्रभु के उच्च श्रेणी के सेवक थे।**

### तात्पर्य

इस श्लोक में राढ़े शब्द राढ़ देश के सन्दर्भ में आया है, जो बंगाल के उस भाग का सूचक है जहाँ गंगा नदी नहीं बहती।

কালা-কৃষ্ণদাস বড় বৈষ্ণব-প্রধান ।
নিত্যানন্দ-চন্দ্র বিনু নহি জানে আন ॥ ৩৭ ॥

**काला-कृष्णदास बड़ वैष्णव-प्रधान ।**
**नित्यानन्द-चन्द्र विनु नहि जाने आन ॥ ३७ ॥**

**काला-कृष्णदास**—काला कृष्णदास; **बड़**—बड़ा; **वैष्णव-प्रधान**—उच्च कोटि के वैष्णव; **नित्यानन्द-चन्द्र**—भगवान् नित्यानन्द चन्द्र; **विनु**—बिना; **नाहि जाने**—नहीं जानते थे; **आन**—और कुछ।

### अनुवाद

**नित्यानन्द प्रभु के बाइसवें भक्त काला कृष्णदास थे, जो नवें गोपाल थे। वे प्रथम श्रेणी के वैष्णव थे और नित्यानन्द प्रभु के अतिरिक्त अन्य किसी को नहीं जानते थे।**

### तात्पर्य

*गौर-गणोद्देश्य दीपिका* (१३२) में कहा गया है कि काला कृष्णदास, जो कालिया कृष्णदास के नाम से भी जाने जाते थे, पहले लवंग नामक गोपाल थे। वे बारह गोपालों में से एक थे।

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर अपने *अनुभाष्य* में लिखते हैं, "कालिया कृष्णदास का निवास स्थान आकाइहाट नामक गाँव में था, जो बर्दवान जिले में कटवा डाकघर तथा थाना के अन्तर्गत स्थित है। यह नवद्वीप जाने वाली सड़क पर स्थित है। आकाइहाट पहुँचने के लिए ब्याण्डेल जंक्शन से कटवा रेलवे स्टेशन पर उतरकर लगभग दो मील चलना पड़ता है। अथवा दाँइहाट स्टेशन पर उतरकर एक मील चलना होता है। आकाइहाट बहुत छोटा-सा गाँव है। चैत्र मास में वारुणी के दिन काला कृष्णदास का तिरोधान-दिवस मनाया जाता है।"

শ্রী-সদাশিব কবিরাজ—বড় মহাশয় ।
শ্রী-পুরুষোত্তম-দাস—তাঁহার তনয় ॥ ৩৮ ॥

**श्री-सदाशिव कविराज—बड़ महाशय ।**
**श्री-पुरुषोत्तम-दास—ताँहार तनय ॥ ३८ ॥**

**श्री-सदाशिव कविराज**—श्री सदाशिव कविराज; **बड़**—बड़े; **महाशय**—आदरणीय पुरुष; **श्री-पुरुषोत्तम-दास**—श्री पुरुषोत्तम दास; **ताँहार तनय**—उनके बेटे।

### अनुवाद

**श्री नित्यानन्द प्रभु के तेइसवें और चौबीसवें भक्त सदाशिव कविराज तथा उनके पुत्र पुरुषोत्तमदास थे, जो दसवें गोपाल थे।**

আজন্ম নিমগ্ন নিত্যানন্দের চরণে ।
নিরন্তর বাল্য-লীলা করে কৃষ্ণ-সনে ॥ ৩৯ ॥

**आजन्म निमग्न नित्यानन्देर चरणे ।**
**निरन्तर बाल्य-लीला करे कृष्ण-सने ॥ ३९ ॥**

**आजन्म**—जन्म से; **निमग्न**—निमग्न; **नित्यानन्देर**—नित्यानन्द प्रभु के; **चरणे**—चरणकमलों में; **निरन्तर**—सदा; **बाल्य-लीला**—बाल्य लीला; **करे**—करते; **कृष्ण-सने**—कृष्ण के साथ।

### अनुवाद

**जन्म से ही पुरुषोत्तम दास नित्यानन्द प्रभु के चरणकमलों की सेवा में निमग्न रहते थे और सदैव कृष्ण के साथ बच्चों जैसे खेल में लगे रहते थे।**

### तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर अपने *अनुभाष्य* में लिखते हैं, "सदाशिव कविराज तथा नागर पुरुषोत्तम पिता-पुत्र थे, जिन्हें *चैतन्य भागवत* में *महाभाग्यवान* कहा गया है। वे वैद्य जाति के थे। *गौरगणोद्देश-दीपिका* (१५६) के अनुसार कृष्ण की सर्वाधिक प्रिय गोपी चन्द्रावली ने बाद में सदाशिव कविराज के रूप में जन्म लिया। श्लोक १९४ तथा २०० में यह कहा गया है कि सदाशिव कविराज के पिता कंसारि सेन पहले कृष्णलीला की

रत्नावली नामक गोपी थे। सदाशिव कविराज के परिवार के सारे लोग चैतन्य महाप्रभु के महान् भक्त थे। पुरुषोत्तमदास ठाकुर कभी-कभी सुखसागर में रहा करते थे, जो चाकदह तथा शिमुरालि स्टेशनों के निकट है। पुरुषोत्तमदास ठाकुर ने जितने विग्रहों की स्थापना की थी, वे सभी पहले बेलेडाँगा ग्राम में थे; किन्तु मन्दिर के ध्वस्त हो जाने पर वे विग्रह सुखसागर लाये गये। जब मन्दिर गंगा नदी के पट में चला गया, तो उन विग्रहों को जाह्नवा माता के विग्रह समेत साहेबडाँगा बेडिग्राम लाया गया। चूँकि वह स्थान भी विनष्ट हो चुका है, अतएव सारे विग्रह चाँदुडेग्राम में स्थित हैं, जो पालपाड़ा से एक मील ऊपर की ओर स्थित है।"

তাঁর পুত্র——মহাশয় শ্রী-কানু ঠাকুর ।
যাঁর দেহে রহে কৃষ্ণ-প্রেমামৃত-পূর ॥৪০॥

**ताँर पुत्र——महाशय श्री-कानु ठाकुर ।**
**य्याँर देहे रहे कृष्ण-प्रेमामृत-पूर ॥ ४० ॥**

**ताँर पुत्र**—उनके पुत्र; **महाशय**—एक आदरणीय पुरुष; **श्री-कानु ठाकुर**—श्री कानु ठाकुर; **य्याँर**—जिसके; **देहे**—शरीर में; **रहे**—रहता; **कृष्ण-प्रेम-अमृत-पूर**—कृष्ण भक्ति का अमृत।

**अनुवाद**

**अत्यन्त सम्माननीय व्यक्ति श्री कानु ठाकुर पुरुषोत्तम दास ठाकुर के पुत्र थे। वे इतने बड़े भक्त थे कि भगवान् कृष्ण सदैव उनके शरीर में वास करते थे।**

**तात्पर्य**

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर अपने *अनुभाष्य* में लिखते हैं, "कानु ठाकुर के मुख्यालय पहुँचने के लिए झिकरगाछा घाट स्टेशन से नाव द्वारा कपोताक्ष नदी जाना होता है। अन्यथा झिकरगाछा घाट स्टेशन से दो ढाई मील सीधे जाने पर बोधखाना देखा जा सकता है, जहाँ कानु ठाकुर का मुख्यालय है। सदाशिव के पुत्र पुरुषोत्तम ठाकुर, एवं पुरूषोत्तम के पुत्र कानु ठाकुर थे। कानु ठाकुर के वंशज उन्हें नागर पुरुषोत्तम के नाम से जानते हैं। वे कृष्णलीला

के समय दाम नामक ग्वालबाल थे। कहा जाता है कि कानु ठाकुर का जन्म होते ही उनकी माता जाह्नवा का देहान्त हो गया। अभी वे बारह दिन के थे, तभी श्री नित्यानन्द प्रभु उन्हें खड़दह-स्थित अपने घर ले गये। यह निश्चित हो चुका है कि कानु ठाकुर बंगाब्द ९४२ (१५३५ ई.) के आसपास बंगाल में उत्पन्न हुए थे। कहा जाता है कि उनका जन्म रथयात्रा के दिन हुआ था। वे जन्म से ही भगवान् कृष्ण के बड़े भक्त थे, इसलिए श्री नित्यानन्द प्रभु ने उनका नाम शिशु कृष्णदास रखा। जब वे पाँच साल के थे, तो वे जाह्नवा माता के साथ वृन्दावन गये। कानु ठाकुर के भावमय लक्षणों को देखकर ही गोस्वामियों ने उनका नाम कानाइ ठाकुर रख दिया।

"कानु ठाकुर के परिवार में राधा-कृष्ण विग्रह हैं, जिनका नाम प्राणवल्लभ है। कहा जाता है कि उनके परिवार में इस विग्रह की पूजा चैतन्य महाप्रभु के आविर्भाव के बहुत पहले से होती आ रही थी। जब बंगाल पर महाराष्ट्रियों का आक्रमण हुआ, तो कानु ठाकुर का परिवार तितर-बितर हो गया, किन्तु आक्रमण के बाद उस परिवार के एक व्यक्ति हरिकृष्ण गोस्वामी अपने असली घर बोधखाना लौट आये और फिर से प्राणवल्लभ विग्रह की स्थापना की। आज भी उस परिवार के वंशज प्राणवल्लभ विग्रह की पूजा करते हैं। कानु ठाकुर खेतरि उत्सव के समय उपस्थित थे, जिसमें जाह्नवा देवी तथा वीरभद्र गोस्वामी भी गये थे। कानु ठाकुर के परिवार के एक व्यक्ति माधवाचार्य ने श्री नित्यानन्द प्रभु की पुत्री गंगादेवी से विवाह कर लिया। पुरुषोत्तम ठाकुर तथा कानु ठाकुर दोनों ही के अनेक ब्राह्मण शिष्य थे। कानु ठाकुर के बहुत से शिष्यों के वंशज मिदनापुर जिले में शिलावती नदी के किनारे स्थित गड़बेटा नामक गाँव में रहते हैं।"

মহা-ভাগবত-শ্রেষ্ঠ দত্ত উদ্ধারণ ।
সর্ব-ভাবে সেবে নিত্যানন্দের চরণ ॥ ৪১ ॥

**महा-भागवत-श्रेष्ठ दत्त उद्धारण ।**
**सर्व-भावे सेवे नित्यानन्देर चरण ॥ ४१ ॥**

**महा-भागवत**—महान् भक्त; **श्रेष्ठ**—श्रेष्ठ; **दत्त**—दत्त; **उद्धारण**—उद्धारण; **सर्व-भावे**—

सभी प्रकार से; **सेवे**—पूजा करते; **नित्यानन्देर**—नित्यानन्द प्रभु के; **चरण**—चरणकमलों की।

### अनुवाद

**बारह गोपालों में से ग्यारहवें गोपाल उद्धारण दत्त ठाकुर श्री नित्यानन्द प्रभु के उन्नत भक्त थे। वे नित्यानन्द प्रभु के चरणकमलों की सभी प्रकार से सेवा करते थे।**

### तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर अपने *अनुभाष्य* में लिखते हैं, "*गौरगणोद्देश-दीपिका* (१२९) के अनुसार उद्धारण दत्त ठाकुर पहले वृन्दावन के सुबाहु नामक ग्वालबाल थे। इनको पहले श्री उद्धारण दत्त कहते थे। ये सप्तग्राम के रहने वाले थे, जो हुगली जिले में त्रिशबिघा स्टेशन के निकट सरस्वती नदी के तट पर स्थित है। उद्धारण ठाकुर के समय में सप्तग्राम एक बहुत बड़ा नगर था, जिसके अन्तर्गत वासुदेवपुर, बाँशबेड़िया, कृष्णपुर, नित्यानन्दपुर, शिवपुर, शंखनगर तथा सप्तग्राम आते थे।"

कलकत्ता का विकास ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत प्रभावशाली व्यापारिक जाति, विशेषतया *सुवर्ण-वणिक* जाति द्वारा किया गया, जो सप्तग्राम से पूरे कलकत्ता में अपना व्यापार जमाने तथा घर बनाने आई थी। वे कलकत्ता के सप्तग्रामी व्यापारी जन कहलाते थे और उनमें से अधिकांश लोग मल्लिक तथा सिल परिवारों के थे। श्रील उद्धारण ठाकुर की ही तरह आधे से ज्यादा कलकत्ता इसी जाति से सम्बन्धित था। हमारा पैतृक परिवार भी इसी जिले और जाति से था। कलकत्ता के मल्लिक दो परिवारों में विभाजित हैं—सिल परिवार तथा दे परिवार। दे परिवार के सारे मल्लिक मूलतः एक ही परिवार तथा गोत्र के हैं। हम भी पहले दे परिवार शाखा से सम्बन्धित थे, जिसके सदस्यों को मुसलमान शासकों से मल्लिक की पदवी प्राप्त हुई थी।

*चैतन्य-भागवत* (अन्त्य-खण्ड, अध्याय ५) में कहा गया है कि उद्धारण दत्त एक महान् एवं उदार वैष्णव थे। वे नित्यानन्द प्रभु की पूजा करने का अधिकार लेकर उत्पन्न हुए थे। यह भी कहा गया है कि नित्यानन्द प्रभु खड़दह में कुछ काल तक रहने के बाद सप्तग्राम गये और वहाँ पर उद्धारण दत्त के

मकान में ठहरे। उद्धारण दत्त का सम्बन्ध जिस स्वर्ण-वणिक जाति से था, वह वास्तव में वैष्णव जाति थी। इसके सदस्य साहुकार तथा स्वर्ण के व्यापारी थे। बहुत काल पूर्व बल्लाल सेन तथा सुवर्णवणिक जाति में बहुत बड़े साहुकार गौरी सेन के कारण अनबन हो गई। बल्लाल सेन गौरी सेन से उधार लेकर मनमाना खर्च करते थे। इसलिए गौरी सेन ने धन देना बन्द कर दिया। बल्लाल सेन ने इसका बदला स्वर्णवणिकों को जाति से बहिष्कृत कराने का षड्यन्त्र बनाकर लिया। तब से वे उच्च जाति अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्यों से बहिष्कृत कर दिये गये। किन्तु श्रील नित्यानन्द प्रभु की कृपा से स्वर्ण-वणिक जाति फिर से ऊपर उठ गई। *चैतन्य भागवत* में कहा गया है— *यतेक वणिक कुल उद्धारण हैते पवित्र हइल द्विधा नाहिक इहाते*—इसमें सन्देह नहीं कि सुर्वणवणिक समाज के सारे सदस्य श्री नित्यानन्द प्रभु द्वारा फिर से पवित्र बना दिये गये।

सप्तग्राम में अब भी श्री चैतन्य महाप्रभु का षड्भुजी विग्रह है, जिसकी पूजा उद्धारण दत्त ठाकुर स्वयं करते थे। श्री चैतन्य महाप्रभु के दाएँ नित्यानन्द प्रभु का और बाएँ गदाधर प्रभु का विग्रह है। इसके अतिरिक्त राधा-गोविन्द मूर्ति तथा शालग्राम शिला भी हैं और सिंहासन के नीचे श्री उद्धारण दत्त ठाकुर की छवि है। अब मन्दिर के सामने एक बड़ा-सा हाल है और इसके सामने माधवीलता का पौधा लगा है। यह मन्दिर अत्यन्त छायादार, शीतल तथा अच्छी जगह पर स्थित है। सन् १९६७ में जब हम अमरीका से लौटे, तब इस मन्दिर की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों ने यहाँ आने के लिए हमें बुलाया और इस तरह हमें अपने कुछ अमरीकी शिष्यों सहित इस मन्दिर को देखने का अवसर प्राप्त हुआ। पहले अपने बाल्यकाल में हमने अपने माता-पिता के साथ इस मन्दिर के दर्शन किये थे, क्योंकि सुवर्ण-वणिक जाति के सारे लोग उद्धारण दत्त ठाकुर के इस मन्दिर में विशेष रुचि दिखलाते हैं।

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर अपने *अनुभाष्य* में लिखते हैं, "१२८३ बंगाब्द (१८७६ ई.) में निताई दास नामक एक बाबाजी ने इस मन्दिर के लिए १२ बीघे (लगभग चार एकड़) भूमि दान में प्राप्त की। बाद में इस मन्दिर की व्यवस्था गड़बड़ा गई, किन्तु बंगाब्द १३०६ (१८९९ ई.) में हुगली के

उपन्यायाधीश सुप्रसिद्ध बलराम मल्लिक तथा धनी सुवर्ण-वणिक जाति के अनेक सदस्यों के सहयोग से मन्दिर का प्रबन्ध काफी सुधर गया। अभी पचास वर्ष भी नहीं हुए, उद्धारण दत्त ठाकुर के परिवार के एक सदस्य जगमोहन दत्त ने मन्दिर में उद्धारण दत्त ठाकुर का काष्ठ का विग्रह स्थापित किया था, किन्तु अब वह मूर्ति वहाँ नहीं है। इस समय उद्धारण दत्त ठाकुर की छवि की पूजा की जाती है। कहा जाता है कि उद्धारण दत्त ठाकुर का काष्ठ-विग्रह श्री मदनमोहन दत्त उठा ले गये और अब श्रीनाथ दत्त द्वारा उसकी पूजा शालग्राम शिला के साथ-साथ की जाती है।

"उद्धारण दत्त ठाकुर नैहाटी में जो कटवा से डेढ़ मील उत्तर में है, एक बड़े जमींदार की जायदाद के प्रबन्धक (दीवान) थे। इस शाही परिवार के ध्वंसावशेष अब भी दैहाट स्टेशन के निकट देखे जा सकते हैं। चूँकि उद्धारण दत्त ठाकुर जायदाद के प्रबन्धक थे, अतएव इसे उद्धारणपुर भी कहते हैं। उद्धारण दत्त ठाकुर ने निताई-गौर विग्रहों की स्थापना की थी, जिन्हें बाद में जमींदार के घर ले जाया गया, जो वनओयारीबाड़ कहलाता है। श्रील उद्धारण दत्त ठाकुर आजीवन गृहस्थ बने रहे। उनके पिता का नाम श्रीकर दत्त था, माता का नाम भद्रावती था और पुत्र का नाम श्रीनिवास दत्त था।"

আচার্য বৈষ্ণবানন্দ ভক্তি-অধিকারী ।
পূর্বে নাম ছিল যাঁর 'রঘুনাথ পুরী' ॥ ৪২॥

**आचार्य वैष्णवानन्द भक्ति-अधिकारी ।**
**पूर्वे नाम छिल ग्राँर 'रघुनाथ पुरी' ॥ ४२॥**

**आचार्य**—आचार्य, गुरु; **वैष्णवानन्द**—वैष्णवानन्द; **भक्ति**—भक्ति; **अधिकारी**—सुपात्र; **पूर्वे**—पहले; **नाम**—नाम; **छिल**—था; **ग्राँर**—जिनका; **रघुनाथ पुरी**—रघुनाथ पुरी।

अनुवाद

**नित्यानन्द प्रभु के सत्ताइसवें प्रमुख भक्त आचार्य वैष्णवानन्द थे, जो भक्तिमयी सेवा में एक महान् अधिकारी थे। वे पहले रघुनाथ पुरी नाम से प्रसिद्ध थे।**

### तात्पर्य

*गौरगणोद्देश-दीपिका* (९७) में बतलाया गया है कि पहले रघुनाथ पुरी अष्ट-सिद्धियों में अत्यन्त शक्तिशाली थे। वे इन सिद्धियों में से ही एक अवतार थे।

বিষ্ণুদাস, নন্দন, গঙ্গাদাস—তিন ভাই।
পূর্বে যাঁর ঘরে ছিলা ঠাকুর নিতাই ॥৪৩॥

**विष्णुदास, नन्दन, गङ्गादास—तिन भाइ ।**
**पूर्वे ग्याँर घरे छिला ठाकुर निताइ ॥४३॥**

**विष्णुदास**—विष्णुदास; **नन्दन**—नन्दन; **गङ्गादास**—गंगादास; **तिन भाइ**—तीन भाई; **पूर्वे**—पहले; **ग्याँर**—जिनके; **घरे**—घर में; **छिला**—रुके; **ठाकुर निताइ**—नित्यानन्द प्रभु।

### अनुवाद

**नित्यानन्द प्रभु के एक अन्य महत्त्वपूर्ण भक्त विष्णुदास थे, जिनके दो भाई थे—नन्दन तथा गंगादास। कभी-कभी नित्यानन्द प्रभु इनके घर में ठहरते थे।**

### तात्पर्य

विष्णुदास, नन्दन तथा गंगादास—ये तीनों भाई नवद्वीप के निवासी थे और भट्टाचार्य ब्राह्मण-कुल के थे। विष्णुदास तथा गंगादास कुछ काल तक जगन्नाथ पुरी में श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ ठहरे थे। *चैतन्य-भागवत* में लिखा है कि पहले नित्यानन्द प्रभु उनके घर में रुका करते थे।

নিত্যানন্দ-ভৃত্য—পরমানন্দ উপাধ্যায়।
শ্রী-জীব পণ্ডিত নিত্যানন্দ-গুণ গায় ॥৪৪॥

**नित्यानन्द-भृत्य—परमानन्द उपाध्याय ।**
**श्री-जीव पण्डित नित्यानन्द-गुण गाय ॥४४॥**

**नित्यानन्द-भृत्य**—नित्यानन्द प्रभु के सेवक; **परमानन्द उपाध्याय**—परमानन्द उपाध्याय; **श्री-जीव पण्डित**—श्री जीव पण्डित; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु; **गुण**—गुण; **गाय**—महिमा गाई।

अनुवाद

**परमानन्द उपाध्याय नित्यानन्द प्रभु के महान् सेवक थे और श्री जीव पण्डित नित्यानन्द प्रभु के गुणों का बखान करते थे।**

तात्पर्य

श्री परमानन्द उपाध्याय महान् भक्त थे। उनका नामोल्लेख *चैतन्य-भागवत* में हुआ है। वहीं यह भी उल्लेख है कि श्री जीव पण्डित रत्नगर्भ आचार्य के पुत्र तथा नित्यानन्द प्रभु के पिता हाड़ाइ ओझा के बचपन के मित्र थे। *गौरगणोद्देश-दीपिका* (१६९) में कहा गया है कि जीव पण्डित पूर्वजन्म में इन्दिरा नाम की गोपी थे।

পরমানন্দ গুপ্ত——কৃষ্ণ-ভক্ত মহামতী ।
পূর্বে যাঁর ঘরে নিত্যানন্দের বসতি ॥ ৪৫ ॥

**परमानन्द गुप्त——कृष्ण-भक्त महामती ।**
**पूर्वे य़াঁর घरे नित्यानन्देर वसति ॥ ४५ ॥**

**परमानन्द गुप्त**—परमानन्द गुप्त; **कृष्ण-भक्त**—भगवान् कृष्ण के एक महान् भक्त; **महा-मति**—आध्यात्मिक चेतना में उन्नत; **पूर्वे**—पहले; **य़ाँर**—जिनके; **घरे**—घर में; **नित्यानन्देर**—नित्यानन्द प्रभु का; **वसति**—निवास।

अनुवाद

**नित्यानन्द प्रभु के इकतीसवें भक्त श्री परमानन्द गुप्त थे, जो कृष्ण-भक्त थे और आध्यात्मिक चेतना में अग्रणी थे। नित्यानन्द प्रभु पहले उनके घर कुछ काल तक रह चुके थे।**

तात्पर्य

परमानन्द गुप्त ने *कृष्ण स्तवावली* नामक भगवान् कृष्ण की स्तुति की रचना की है। *गौरगणोद्देश-दीपिका* (१९४ तथा १९९) में इन्हें पूर्वजन्म की मंजुमेधा नामक गोपी बतलाया गया है।

নারায়ণ, কৃষ্ণদাস আর মনোহর ।
দেবানন্দ——চারি ভাই নিতাই-কিঙ্কর ॥ ৪৬ ॥

**नारायण, कृष्णदास आर मनोहर ।**
**देवानन्द—चारि भाइ निताइ-किङ्कर ॥ ४६ ॥**

**नारायण**—नारायण; **कृष्णदास**—कृष्णदास; **आर**—और; **मनोहर**—मनोहर; **देवानन्द**—देवानन्द; **चारि भाइ**—चारों भाई; **निताइ-किङ्कर**—नित्यानन्द प्रभु के सेवक।

अनुवाद

**नारायण, कृष्णदास, मनोहर तथा देवानन्द—ये चारों भाई सदैव नित्यानन्द प्रभु की सेवा में लगे रहने वाले बत्तीसवें, तैंतीसवें, चौंतीसवें और पैंतीसवें प्रभुख भक्त थे।**

হোড় কৃষ্ণদাস—নিত্যানন্দ-প্রভু-প্রাণ ।
নিত্যানন্দ-পদ বিনু নাহি জানে আন ॥ ৪৭ ॥

**होड़ कृष्णदास—नित्यानन्द-प्रभु-प्राण ।**
**नित्यानन्द-पद विनु नाहि जाने आन ॥ ४७ ॥**

**होड़ कृष्णदास**—होड़ कृष्णदास; **नित्यानन्द-प्रभु**—नित्यानन्द प्रभु के; **प्राण**—जीवन तथा प्राण; **नित्यानन्द-पद**—नित्यानन्द प्रभु के चरणकमल; **विनु**—बिना; **नाहि**—नहीं; **जाने**—जानते; **आन**—और कुछ।

अनुवाद

**भगवान् नित्यानन्द के छत्तीसवें भक्त होड़ कृष्णदास थे, जिनके लिए नित्यानन्द प्रभु जीवन और प्राण थे। वे सदैव श्री नित्यानन्द के चरणकमलों पर समर्पित रहते थे और उनके अतिरिक्त वे अन्य किसी को नहीं जानते थे।**

तात्पर्य

कृष्णदास होड़ बड़गाछि के निवासी थे, जो अब बाँग्लादेश में है।

নকড়ি, মুকুন্দ, সূর্য, মাধব, শ্রীধর ।
রামানন্দ বসু, জগন্নাথ, মহীধর ॥ ৪৮ ॥

**नकड़ि, मुकुन्द, सूर्य्य, माधव, श्रीधर ।**
**रामानन्द वसु, जगन्नाथ, महीधर ॥ ४८ ॥**

**नकड़ि**—नकड़ी; **मुकुन्द**—मुकुन्द; **सूर्य्य**—सूर्य; **माधव**—माधव; **श्रीधर**—श्रीधर; **रामानन्द वसु**—रामानन्द वसु; **जगन्नाथ**—जगन्नाथ; **महीधर**—महीधर।

अनुवाद

**नित्यानन्द प्रभु के भक्तों में नकड़ि सैंतीसवें, मुकुन्द अड़तीसवें, सूर्य उन्तालीसवें, माधव चालीसवें, श्रीधर इकतालीसवें, रामानन्द बयालीसवें, जगन्नाथ तैंतालीसवें तथा महीधर चवालीसवें क्रम पर थे।**

तात्पर्य

श्रीधर बारहवें गोपाल थे।

শ্রীমন্ত, গোকুল-দাস হরিহরানন্দ ।
শিবাই, নন্দাই, অবধূত পরমানন্দ ॥৪৯॥

**श्रीमन्त, गोकुल-दास हरिहरानन्द ।**
**शिवाइ, नन्दाइ, अवधूत परमानन्द ॥ ४९ ॥**

**श्री-मन्त**—श्रीमन्त; **गोकुल-दास**—गोकुलदास; **हरिहरानन्द**—हरीहरानन्द; **शिवाइ**—शिवाई; **नन्दाइ**—नन्दाई; **अवधूत परमानन्द**—अवधूत परमानन्द।

अनुवाद

**श्रीमन्त पैंतालीसवें, गोकुलदास छियालीसवें, हरिहरानन्द सैंतालीसवें, शिवाई अड़तालीसवें, नन्दाइ उनचासवें तथा परमानन्द पचासवें भक्त थे।**

বসন্ত, নবনী হোড়, গোপাল, সনাতন ।
বিষ্ণাই হাজরা, কৃষ্ণানন্দ, সুলোচন ॥৫০॥

**वसन्त, नवनी होड़, गोपाल, सनातन ।**
**विष्णाइ हाजरा, कृष्णानन्द, सुलोचन ॥ ५० ॥**

**वसन्त**—वसन्त; **नवनी होड़**—नवनी होड़; **गोपाल**—गोपाल; **सनातन**—सनातन; **विष्णाइ हाजरा**—विष्णाइ हाजरा; **कृष्णानन्द**—कृष्णचन्द्र; **सुलोचन**—सुलोचन।

अनुवाद

**वसन्त इक्यावनवें, नवनी होड़ बावनवें, गोपाल तिरपनवें, सनातन चौवनवें, विष्णाइ पचपनवें, कृष्णानन्द छप्पनवें एवं सुलोचन सत्तावनवें भक्त थे।**

### तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर अपने *अनुभाष्य* में लिखते हैं, "नवनी होड़ बड़गाछि के राजा के पुत्र होड़ कृष्णदास ही प्रतीत होते हैं। उनके पिता का नाम हरि होड़ था। लाल गोलाघाट रेलवे लाइन से होकर बड़गाछि जाया जा सकता है। पहले गंगा नदी बड़गाछि से होकर बहती थी, लेकिन अब उसने कालशिर खाल नहर का रूप धारण कर लिया है। मुड़ागाछा स्टेशन के पास शालिग्राम नामक एक गाँव है, जहाँ राजा कृष्णदास ने श्री नित्यानन्द प्रभु के विवाह की व्यवस्था की थी। ऐसा वर्णन *भक्तिरत्नाकर* की बारहवीं तरंग में मिलता है। कभी-कभी कहा जाता है कि नवनी होड़ राजा कृष्णदास के पुत्र थे। उनके वंशज आज भी बहिरगाछि के निकट रुकुणपुर गाँव में रहते हैं। वे दक्षिण राढ़ीय कायस्थ जाति के हैं, किन्तु उन्हें ब्राह्मण बना दिया गया है और वे अब भी सभी जातियों को दीक्षा देते हैं।"

কংসারি সেন, রামসেন, রামচন্দ্র কবিরাজ ।
গোবিন্দ, শ্রীরঙ্গ, মুকুন্দ, তিন কবিরাজ ॥৫১॥

**कंसारि सेन, रामसेन, रामचन्द्र कविराज ।**
**गोविन्द, श्रीरङ्ग, मुकुन्द, तिन कविराज ॥५१॥**

**कंसारि सेन**—कंसारी सेन; **रामसेन**—रामसेन; **रामचन्द्र कविराज**—रामचन्द्र कविराज; **गोविन्द**—गोविन्द; **श्रीरङ्ग**—श्रीरंग; **मुकुन्द**—मुकुन्द; **तिन कविराज**—तीनों कविराज हैं।

### अनुवाद

**श्री नित्यानन्द के अट्ठावनवें महान् भक्त कंसारि सेन, उनसठवें रामसेन, साठवें रामचन्द्र कविराज तथा इकसठवें, बासठवें एवं तिरसठवें भक्त गोविन्द, श्रीरंग तथा मुकुन्द सभी वैद्य थे।**

### तात्पर्य

श्री रामचन्द्र कविराज खण्डवासी चिरंजीव तथा सुनन्द के पुत्र थे और श्रीनिवास आचार्य के शिष्य तथा नरोत्तमदास ठाकुर के घनिष्ठ मित्र थे, जिन्होंने कई बार उनकी संगति के लिए प्रार्थना की थी। उनका सबसे छोटा भाई गोविन्द कविराज था। श्रील जीव गोस्वामी ने श्री रामचन्द्र कविराज की कृष्ण-भक्ति

की अत्यधिक प्रशंसा की और उन्हें *कविराज* की उपाधि दी। श्री रामचन्द्र कविराज गृहस्थी के कार्यों से सदा विरत रहते थे और श्रीनिवास आचार्य तथा नरोत्तमदास ठाकुर के प्रचार-कार्य में काफी सहायता करते थे। पहले वे श्रीखंड में रहते थे, किन्तु बाद में गंगा के तट पर कुमारनगर में रहने लगे।

गोविन्द कविराज रामचन्द्र कविराज के भाई तथा श्रीखंड निवासी चिरंजीव के सबसे छोटे पुत्र थे। यद्यपि वे प्रारम्भ में *शाक्त* अर्थात् दुर्गा देवी की पूजा करने वाले थे, किन्तु बाद में श्रीनिवास आचार्य प्रभु ने उन्हें दीक्षा दी। गोविन्द कविराज भी पहले श्रीखंड में और बाद में कुमारनगर में रहे, किन्तु बाद में वे पद्मा नदी के दक्षिणी तट पर स्थित तेलिया बुधरि नामक गाँव चले गये। गोविन्द कविराज की लिखी दो पुस्तकें हैं—*संगीतमाधव* तथा *गीतामृत*। वे महान् वैष्णव कवि थे, इसलिए श्रील जीव गोस्वामी ने उन्हें कविराज की उपाधि प्रदान की। इनका उल्लेख *भक्तिरत्नाकर* की नवम तरंग में है।

*गौरगणोद्देश-दीपिका* (१९४ तथा २००) के अनुसार कंसारि सेन पूर्वजन्म में व्रज की रत्नावली गोपी थे।

পীতাম্বর, মাধবাচার্য, দাস দামোদর ।
শঙ্কর, মুকুন্দ, জ্ঞান-দাস, মনোহর ॥৫২॥

**पीताम्बर, माधवाचार्य्र, दास दामोदर ।**
**शङ्कर, मुकुन्द, ज्ञान-दास, मनोहर ॥५२॥**

**पीताम्बर**—पीताम्बर; **माधवाचार्य्र**—माधवाचार्य; **दास दामोदर**—दामोदर दास; **शङ्कर**—शंकर; **मुकुन्द**—मुकुन्द; **ज्ञान-दास**—ज्ञानदास; **मनोहर**—मनोहर।

अनुवाद

**नित्यानन्द प्रभु के भक्तों में पीताम्बर चौसठवें, माधवाचार्य पैंसठवें, दामोदर दास छियासठवें, शंकर सतसठवें, मुकुन्द अड़सठवें, ज्ञानदास उनहत्तरवें तथा मनोहर सत्तरवें भक्त थे।**

নর্তক গোপাল, রামভদ্র, গৌরাঙ্গ-দাস ।
নৃসিংহ-চৈতন্য, মীনকেতন রামদাস ॥৫৩॥

**नर्तक गोपाल, रामभद्र, गौराङ्ग-दास ।**
**नृसिंह-चैतन्य, मीनकेतन रामदास ॥५३॥**

**नर्तक गोपाल**—नर्तक गोपाल; **रामभद्र**—रामभद्र; **गौराङ्ग-दास**—गौरांगदास; **नृसिंह-चैतन्य**—नृसिंह चैतन्य; **मीनकेतन रामदास**—मीनकेतन रामदास।

**अनुवाद**

**नर्तक गोपाल इकहत्तरवें, रामभद्र बहत्तरवें, गौरांग दास तिहत्तरवें, नृसिंह चैतन्य चौहत्तरवें तथा मीनकेतन रामदास पचहत्तरवें भक्त थे।**

**तात्पर्य**

*गौरगणोद्देश-दीपिका* (६८) में मीनकेतन रामदास संकर्षण के अवतार थे।

বৃন্দাবন-দাস—নারায়ণীর নন্দন ।
'চৈতন্য-মঙ্গল' যেঁহো করিল রচন ॥৫৪॥

**वृन्दावन-दास—नारायणीर नन्दन ।**
**'चैतन्य-मङ्गल' य्रेंहो करिल रचन ॥५४॥**

**वृन्दावन-दास**—श्रील वृन्दावन दास ठाकुर; **नारायणीर नन्दन**—नारायणी के पुत्र; **चैतन्य-मङ्गल**—*चैतन्य मंगल* नामक ग्रंथ; **य्रेंहो**—जिन्होंने; **करिल**—की; **रचन**—रचना।

**अनुवाद**

**श्रीमती नारायणी के पुत्र वृन्दावन दास ठाकुर ने श्री चैतन्य मंगल (जो बाद में श्री चैतन्य भागवत नाम से प्रसिद्ध हुआ) की रचना की।**

ভাগবতে কৃষ্ণ-লীলা বর্ণিলা বেদব্যাস ।
চৈতন্য-লীলাতে ব্যাস—বৃন্দাবন দাস ॥৫৫॥

**भागवते कृष्ण-लीला वर्णिला वेदव्यास ।**
**चैतन्य-लीलाते व्यास—वृन्दावन दास ॥५५॥**

**भागवते**—*श्रीमद्भागवत* में; **कृष्ण-लीला**—भगवान् कृष्ण की लीलाएँ; **वर्णिला**—वर्णन किया; **वेद-व्यास**—द्वैपायन व्यास देव; **चैतन्य-लीलाते**—चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं में; **व्यास**—व्यासदेव; **वृन्दावन दास**—श्रील वृन्दावन दास ठाकुर।

अनुवाद

**श्रील वेदव्यास ने श्रीमद्भागवत में कृष्ण-लीलाओं का वर्णन किया और श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं के व्यास हुए वृन्दावन दास।**

तात्पर्य

श्रील वृन्दावन दास ठाकुर वेदव्यास के अवतार थे और कृष्ण-लीला के कुसुमापीड़ नामक स्नेही गोपाल भी थे। दूसरे शब्दों में, *श्री चैतन्य-भागवत* के लेखक श्रील वृन्दावन दास ठाकुर, जो श्रीवास ठाकुर की भांजी नारायणी के पुत्र थे, वेदव्यास तथा गोपाल कुसुमापीड़ के संयुक्त अवतार थे। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर ने *श्री चैतन्य-भागवत* के अपने भाष्य में वृन्दावन दास ठाकुर का विस्तृत जीवन-परिचय दिया है।

সর্বশাখা-শ্রেষ্ঠ বীরভদ্র গোসাঞি ।
তাঁর উপশাখা যত, তার অন্ত নাই ॥৫৬॥

**सर्वशाखा-श्रेष्ठ वीरभद्र गोसाञि ।**
**ताँर उपशाखा य़त, तार अन्त नाइ ॥५६॥**

**सर्व-शाखा-श्रेष्ठ**—सभी शाखाओं में सर्वोत्तम; **वीरभद्र गोसाञि**—वीरभद्र गोसांइ; **ताँर उपशाखा**—उनकी उपशाखाएँ; **य़त**—सब; **तार**—उनमें से; **अन्त**—सीमा; **नाइ**—नहीं है।

अनुवाद

**नित्यानन्द प्रभु की समस्त शाखाओं में वीरभद्र गोसांइ सर्वोपरि थे। उनकी उपशाखाएँ अनन्त थीं।**

অনন্ত নিত্যানন্দ-গণ—কে করু গণন ।
আত্ম-পবিত্রতা-হেতু লিখিলাঁ কত জন ॥৫৭॥

**अनन्त नित्यानन्द-गण—के करु गणन ।**
**आत्म-पवित्रता-हेतु लिखिलाँ कत जन ॥५७॥**

**अनन्त**—असीम; **नित्यानन्द-गण**—श्री नित्यानन्द प्रभु के अनुयायी; **के करु**—कौन कर सकते हैं; **गणन**—गिनना; **आत्म-पवित्रता**—आत्मशुद्धि के; **हेतु**—कारण से; **लिखिलाँ**—मैंने लिखा है; **कत जन**—उनमें से कुछ।

अनुवाद

**श्री नित्यानन्द प्रभु के असंख्य अनुयायियों की कोई गिनती नहीं कर सकता। मैंने तो केवल आत्म शुद्धि के लिए उनमें से कुछ का ही उल्लेख किया है।**

এই সর্ব-শাখা পূর্ণ—পক্ক প্রেম-ফলে ।
যারে দেখে, তারে দিয়া ভাসাইল সকলে ॥ ৫৮॥

**एइ सर्व-शाखा पूर्ण—पक्व प्रेम-फले ।**
**ग्रारे देखे, तारे दिया भासाइल सकले ॥ ५८ ॥**

**एइ**—ये; **सर्व-शाखा**—सभी शाखाएँ; **पूर्ण**—पूर्ण; **पक्व प्रेम-फले**—भगवत्प्रेम के पके फल सहित; **ग्रारे देखे**—वे जिनको भी देखते हैं; **तारे दिया**—उसको वितरण किया; **भासाइल**—आप्लावित हो गये; **सकले**—उनमें से सभी।

अनुवाद

**श्री नित्यानन्द प्रभु के भक्तों की ये सारी शाखाएँ कृष्ण-प्रेम के पके फलों से परिपूर्ण थीं और उनसें जो भी मिला, उन सबको ये फल बाँट दिये और उन्हें कृष्ण-प्रेम से आप्लावित कर दिया।**

অনর্গল প্রেম সবার, চেষ্টা অনর্গল ।
প্রেম দিতে, কৃষ্ণ দিতে ধরে মহাবল ॥ ৫৯॥

**अनर्गल प्रेम सबार, चेष्टा अनर्गल ।**
**प्रेम दिते, कृष्ण दिते धरे महाबल ॥ ५९ ॥**

**अनर्गल**—अवरोध रहित; **प्रेम**—कृष्ण-प्रेम; **सबार**—उनमें से प्रत्येक की; **चेष्टा**—चेष्टा; **अनर्गल**—बिना अवरोध के; **प्रेम दिते**—कृष्ण-प्रेम देने के लिए; **कृष्ण दिते**—कृष्ण देने के लिए; **धरे**—वे रखते हैं; **महाबल**—बहुत शक्ति।

अनुवाद

**इन सारे भक्तों में अबाध, अनन्त कृष्ण-प्रेम प्रदान करने की असीम शक्ति थी। वे अपनी शक्ति से किसी को भी कृष्ण तथा कृष्ण-प्रेम प्रदान कर सकते थे।**

### तात्पर्य

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने गाया है—*कृष्ण से तोमार, कृष्ण दिते पार, तोमार शकति आछे।* इस गीत में भक्तिविनोद ठाकुर बतलाते हैं कि शुद्ध वैष्णव कृष्ण तथा कृष्ण-प्रेम का स्वामी होता है। वह जिस किसी को भी चाहे, उनको इसे प्रदान कर सकता है। अतएव कृष्ण तथा कृष्ण-प्रेम प्राप्त करने के लिए मनुष्य को शुद्ध भक्तों की कृपा खोजनी चाहिए। श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर भी कहते हैं, "गुरु की कृपा से कृष्ण की कृपा प्राप्त होती है। गुरु की कृपा के बिना कोई उन्नति नहीं कर सकता (*यस्य प्रसादाद् भगवत्प्रसादो यस्याप्रसादान् न गतिः कुतोपि*)।" वैष्णव या प्रामाणिक गुरु की कृपा से मनुष्य कृष्ण-प्रेम तथा कृष्ण दोनों को प्राप्त कर सकता है।

সঙ্ক্ষেপে কহিলাঁ এই নিত্যানন্দ-গণ ।
যাঁহার অবধি না পায় 'সহস্র-বদন' ॥৬০॥

**सङ्क्षेपे कहिलाँ एइ नित्यानन्द-गण ।**
**ग्राँहार अवधि ना पाय 'सहस्र-वदन' ॥६०॥**

**सङ्क्षेपे**—संक्षेप में; **कहिलाँ**—वर्णन किया है; **एइ**—ये; **नित्यानन्द-गण**—नित्यानन्द प्रभु के भक्तों; **ग्राँहार**—जिनकी; **अवधि**—सीमा; **ना**—नहीं; **पाय**—पाता; **सहस्र-वदन**—हजारों मुखवाले शेषनाग, जिन पर भगवान् विष्णु लेटे हैं।

### अनुवाद

**मैंने श्री नित्यानन्द प्रभु के अनुयायियों और भक्तों में से कुछ का ही संक्षेप में वर्णन किया है। एक हजार मुखों वाले शेषनाग भी इन सभी असंख्य भक्तों का वर्णन नहीं कर सकते।**

শ্রী-রূপ-রঘুনাথ-পদে যার আশ ।
চৈতন্য-চরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥৬১॥

**श्री-रूप-रघुनाथ-पदे ग्रार आश ।**
**चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥६१॥**

**श्री-रूप**—श्रील रूप गोस्वामी; **रघुनाथ**—श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी; **पदे**—चरणकमलों पर; **याँर**—जिसकी; **आश**—आशा; **चैतन्य-चरितामृत**— *चैतन्य चरितामृत* नामक पुस्तक; **कहे**—वर्णन करता है; **कृष्ण-दास**—श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

**अनुवाद**

**श्री रूप तथा श्री रघुनाथ के उद्देश्य की पूर्ति की प्रबल इच्छा से मैं कृष्णदास उनके चरणचिह्नों पर चलते हुए श्री चैतन्य-चरितामृत का वर्णन कर रहा हूँ।**

*इस प्रकार श्रीचैतन्य-चरितामृत आदिलीला के ग्यारहवें अध्याय का भक्तिवेदान्त-तात्पर्य पूर्ण हुआ, जिसमें नित्यानन्द के अंशों का वर्णन है।*